



यूको



अभिव्यक्ति

कानपुर अंचल कार्यालय की छमाही हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष : 2025-26

अंक : 3

अक्टूबर-मार्च

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)



UCO BANK

(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust



साहित्य के स्तंभ



तुम मृगनयनी, तुम पिकबयनी
तुम छवि की परिणीता-सी,
अपनी बेसुध मादकता में
भूली-सी, भयभीता सी
~ भगवतीचरण वर्मा

भगवतीचरण वर्मा (30 अगस्त 1903 – 5 अक्टूबर 1981) आधुनिक हिंदी साहित्य के एक प्रमुख उपन्यासकार, कहानीकार और कवि थे। उन्हें मुख्य रूप से उनके दार्शनिक उपन्यास 'चित्रलेखा' (1934) और 'भूले-बिसरे चित्र' के लिए जाना जाता है, जिस पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला।

व्यक्तिगत परिचय और शिक्षा

जन्म: 30 अगस्त 1903 को शफीपुर गाँव, उन्नाव ज़िला, उप्र।

शिक्षा: इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. और एल.एल.बी. की।

कार्यक्षेत्र: वकालत, पत्रकारिता (साप्ताहिक 'विचार' और दैनिक 'नवजीवन' का संपादन), आकाशवाणी और फिल्मों में पटकथा लेखन।

राजनीति: 1978 में राज्यसभा के लिए मनोनीत।

प्रमुख कृतियाँ

उपन्यास: चित्रलेखा, भूले-बिसरे चित्र, टेढ़े-मेढ़े रास्ते, तीन वर्ष, अपने खिलौने, सबहिं नवावत राम गोसाईं

कहानी संग्रह: मोर्चाबंदी, राख और चिनगारी, इंस्टालमेंट।

कविता: 'मधुकरण', 'प्रेम-संगीत', और उनकी बेहद लोकप्रिय कविता 'हम दीवानों की क्या हस्ती'।

सम्मान और पुरस्कार

साहित्य अकादमी पुरस्कार: 1961 में उपन्यास 'भूले-बिसरे चित्र' के लिए।

पद्म भूषण: 1971 में साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में।

उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'चित्रलेखा' पर 1941 और 1964 में दो सफल हिंदी फिल्में भी बन चुकी हैं।

कल सहसा यह सन्देश मिला सूने-से युग के बाद मुझे
कुछ रोकर, कुछ क्रोधित हो कर तुम कर लेती हो याद मुझे।

गिरने की गति में मिलकर गतिमय होकर गतिहीन हुआ
एकाकीपन से आया था अब सूनेपन में लीन हुआ।

यह ममता का वरदान सुमुखि है अब केवल अपवाद मुझे
मैं तो अपने को भूल रहा, तुम कर लेती हो याद मुझे।

पुलकित सपनों का क्रय करने में आया अपने प्राणों से
लेकर अपनी कोमलताओं को मैं टकराया पाषाणों से।

मित-मितकर मैंने देखा है मित जानेवाला प्यार यहाँ
सुकुमार भावना को अपनी बन जाते देखा भार यहाँ।

उत्स मरुस्थल बना चुका विस्मृति का विषम विषाद मुझे
किस आशा से छवि की प्रतिमा! तुम कर लेती हो याद मुझे।

यूको



अभिव्यक्ति

कानपुर अंचल कार्यालय की छमाही हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष : 2025-26

अंक : 3

अक्टूबर—मार्च 2026



सम्पादक मंडल

संरक्षक

श्री दीपक कुमार

सहायक महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख

मार्गदर्शन

श्री सुबोध कुमार झा

मुख्य प्रबंधक व उप-अंचल प्रमुख

सुश्री प्रियंका यादव

मुख्य प्रबंधक व विभाग प्रमुख

सुश्री निरुपमा

मुख्य प्रबंधक व विभाग प्रमुख

श्री वीरेंद्र सिहाग

मुख्य प्रबंधक व सुरक्षा प्रमुख

संपादक

श्री तरुण कुमार सिंह

प्रबंधक (राजभाषा)

सहयोग

श्री अक्षयदीप त्रिपाठी

वरिष्ठ प्रबंधक

श्री शुभम अवरुथी

वरिष्ठ प्रबंधक

श्री सौरभ अवरुथी

वरिष्ठ प्रबंधक

श्री अमित कुमार यादव

सहायक प्रबंधक

अनुक्रमणिका

अंचल प्रमुख का सन्देश	01
उप-प्रमुख का सन्देश	02
विभाग प्रमुख का सन्देश	03
संपादकीय	04
शुभकामना सन्देश—जय भूषण / जतिंदर सिंह	05
कविता—निरुपमा / चंद्रभूषण	06
कविता—विशाल अग्रवाल / मनोरंजन कुमार	07
लेख—वीरेंद्र सिहाग / लघुकथा—आशुतोष शर्मा	08
ब्राह्मक बैंकर संवाद—दीपा शुक्ला	09
निबंध—अमित कुमार यादव	10
यात्रा वृत्तांत—सचिन कटियार	12
कविता—अंशुल त्रिपाठी	13
कविता—शिरवा सिंह / अंकित गुप्ता	14
कविता—तरुण कुमार सिंह / पंकज पांडेय	15
खाना खजाना—राजेश कुमार	16
निबंध—सौरभ अवरुथी	17
संस्मरण—सत्येन्द्र वर्मा	18
लेख-विकास राजपूत	19
नन्हें कलाकार/ रंग महल/ रंगों की दुनिया	20
सत्यकथा - मनोज कुमार	23
लघुकथा—प्रशांत भटौरिया	24
लघुकथा—महेंद्र सिंह	25
लेख—शुभम अवरुथी	26
लेख—उमेश कुमार	27
कविता—शैलेन्द्र कुमार वर्मा	28
कविता—अक्षयदीप त्रिपाठी	29
कविता—विशाल वर्मा	30
पुस्तक समीक्षा—अमित कुमार	31
कविता—गीतिका ठाकुर / शाखाओं का उत्कृष्ट प्रदर्शन	32
प्रेरक विचार—आशुतोष शर्मा	33
चित्र आधारित कहानी—कौशलेन्द्र सिंह	34
कविता—आयूष गुप्ता	35
राजभाषा विभाग विशेष— तरुण कुमार सिंह	36
कहानी—मनीषा श्रीवास्तव	37
हार्य—विनोद	38
बैंकिंग शब्दावली	39
गतिविधियाँ	40
आवरण कथा	44



अंचल प्रमुख का सन्देश

दीपक कुमार

प्रिय साथियो,

नमस्कार,

हम सभी ने वित्तीय वर्ष 2025-26 की द्वितीय तिमाही ने कई परिवर्तन देखे, उसके उपरान्त परिस्थितियों को आत्मसात करते हुए बैंकिंग व्यवसाय में उत्कृष्ट कार्य करने का प्रयास किया। यह प्रयास कई क्षेत्रों में उपलब्धियां लेकर आया, परन्तु फिर भी हमें कुछ क्षेत्रों में आशा के अनुरूप परिणाम देखने को नहीं मिले विशेषकर कृषि क्षेत्र तथा सूक्ष्म, लघु, मध्यम उद्योग में निर्धारित लक्ष्यों से पीछे रहे। रिटेल क्षेत्र में भी प्रदर्शन में गिरावट दर्ज हुई। परन्तु अब हम नए वित्तीय वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं और आगामी छमाही इस दृष्टि से हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हमें बैंकिंग इंडस्ट्री में अपनी स्थिति और सुदृढ़ करने के लिए अभी बहुत परिश्रम और प्रयास करना है। इस समय गैर ब्याज आय पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, इसके साथ ही साथ हमें अपने व्यवसाय के सभी पक्षों में वृद्धि करनी होगी।

हम भारत सरकार के अधीन कार्य करने वाली वित्तीय संस्था हैं और आप जानते हैं कि विकसित भारत@2047 के लिए सरकारी योजनाओं, डिजिटल बैंकिंग और जनसुरक्षा जैसी सुविधाओं का विस्तार हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। इस हेतु हमें अपने प्रयासों में गति लाने की आवश्यकता है। आज एसटीपी व डिजिटल लेंडिंग के जरिए ऋण सुविधाएँ ग्राहकों को देना आसान हो गया है। ये बदलाव आने वाले भविष्य की बैंकिंग का सूचक है, जिसके लिए हमें अपने आप को और तैयार करने की जरूरत है।

हमें केवल एन.पी.ए. खातों में अधिक से अधिक वसूली ही नहीं करनी होगी बल्कि नए एन.पी.ए. खातों को सृजित होने से रोकना भी होगा। समय-समय पर हमारे प्रधान कार्यालय द्वारा विभिन्न लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शिविरों एवं अभियानों का आयोजन किया जाता है। सभी को इनमें बढ़-वढ़कर हिस्सा लेना है और अपने अंचल व बैंक की स्थिति मजबूत करनी है।

हमें यह भी स्मरण रखना होगा कि उपलब्धियों के साथ-साथ उत्तरदायित्व भी बढ़ते हैं। आने वाला समय और अधिक परिश्रम,

योजना एवं समन्वय की माँग करता है। हमें मार्च 2027 के लक्ष्यों को स्पष्ट दृष्टि में रखते हुए अभी से रणनीतिक रूप से कार्य करना होगा। व्यवसाय वृद्धि, परिसंपत्ति गुणवत्ता, गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों पर नियंत्रण, डिजिटल पहल, ग्राहक संतुष्टि और राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन—इन सभी क्षेत्रों में हमें और अधिक सुदृढ़ प्रयास करने होंगे।

मैं आशा करता हूँ कि हम सभी आने वाले समय में और अधिक ऊर्जा, प्रतिबद्धता और नवाचार के साथ कार्य करेंगे। प्रत्येक शाखा, प्रत्येक अधिकारी और प्रत्येक कर्मचारी की भूमिका इस सफलता में महत्वपूर्ण है। यदि हम सभी मिलकर एकजुट प्रयास करें, तो मार्च 2027 के लक्ष्यों को न केवल प्राप्त करेंगे, बल्कि उनसे आगे भी बढ़ेंगे।



राजभाषा विभाग द्वारा प्रतिदिन 'यूको दैनिक' के माध्यम से दैनिक कार्यक्रम और महत्वपूर्ण जानकारी साझा की जाती है, जो निःसंदेह हम सभी के लिए उपयोगी है। साथ ही मुझे विश्वास है कि हमारी पत्रिका 'यूको अभिव्यक्ति' न सिर्फ कानपुर अंचल की विभिन्न शाखाओं के विभिन्न कार्यों एवं उपलब्धियों का दर्पण साबित होगी, अपितु अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी बनेगी। मैं यूको अभिव्यक्ति के संपादक दल की प्रशंसा करता हूँ और साथ में आप सभी से अपील भी करता हूँ कि पत्रिका को और सुन्दर और समृद्ध बनाने के लिए आप सभी प्रवृष्टि, उपलब्धि अथवा जानकारी निरंतर राजभाषा विभाग से मेल के माध्यम से सांझा करते रहे ताकि यह पत्रिका अपनी गुणवत्ता और विषय वस्तु के माध्यम से यूको बैंक में विशिष्ट स्थान प्राप्त कर सके।

धन्यवाद।





उप-अंचल प्रमुख का सन्देश

सुबोध कुमार झा

प्रिय साथियों,

सप्रेम नमस्कार।

यूको बैंक, कानपुर अंचल कार्यालय की छमाही हिंदी गृह पत्रिका “यूको अभिव्यक्ति” के इस नवीन अंक के प्रकाशन के शुभ अवसर पर मैं अंचल के समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों एवं पाठकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका केवल शब्दों का संकलन मात्र नहीं है, बल्कि हमारे विचारों, अनुभवों, रचनात्मकता, कार्य-संस्कृति और सामूहिक प्रयासों की जीवंत अभिव्यक्ति है। “यूको अभिव्यक्ति” वास्तव में हमारे अंचल की कार्यशील चेतना और बौद्धिक ऊर्जा का प्रतिबिंब है।

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि इस अंक में सम्मिलित निबंधों, लेखों, कविताओं एवं रचनात्मक प्रस्तुतियों ने न केवल विषयों की विविधता को दर्शाया है, बल्कि लेखकों की विचार-गहराई, भाषा की सशक्तता और समसामयिक विषयों पर उनकी सजग दृष्टि को भी उजागर किया है। प्रत्येक रचना अपने-आप में विशिष्ट है और यह सिद्ध करती है कि हमारे अधिकारी और कर्मचारी केवल अपने दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन ही नहीं करते, बल्कि साहित्यिक एवं रचनात्मक क्षेत्र में भी समान रूप से सक्षम और संवेदनशील हैं।

मैं इस अवसर पर पत्रिका से जुड़े सभी रचनाकारों की मुक्तकंठ से सराहना करता हूँ। आपकी रचनाएँ न केवल प्रेरणा देती हैं, बल्कि यह भी संदेश देती हैं कि बैंकिंग जैसे व्यावसायिक क्षेत्र में कार्य करते हुए भी रचनात्मकता और संवेदना को जीवित रखा जा सकता है। आपकी लेखनी ने यह सिद्ध किया है कि विचारों की अभिव्यक्ति का यह मंच वास्तव में सार्थक और उपयोगी है। इसके साथ ही, मैं “यूको अभिव्यक्ति” के संपादक मंडल एवं सहयोगी टीम को विशेष रूप से बधाई देना चाहता हूँ। किसी भी पत्रिका का सफल प्रकाशन केवल लेखों के संकलन से संभव नहीं होता, बल्कि इसके पीछे संपादकीय दृष्टि, भाषा-संयोजन, विषय चयन, प्रस्तुतीकरण और निरंतर परिश्रम का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह पत्रिका उनके अथक प्रयासों और टीम भावना का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

कानपुर अंचल कार्यालय के अधीन कार्यरत सभी 57 शाखाओं से मैं विशेष रूप से अपील करना चाहता हूँ कि वे इस पत्रिका को केवल पढ़ने तक सीमित न रखें, बल्कि इसमें सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें। आप सभी के पास अपने-अपने कार्यक्षेत्र से जुड़े अनेक अनुभव, उपलब्धियाँ, नवाचार, चुनौतियाँ और समाधान हैं, जो अन्य शाखाओं के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं। इन अनुभवों को लेख, निबंध, कहानी, कविता, संस्मरण अथवा विचार-लेख के रूप में पत्रिका तक पहुँचाएँ।



वर्तमान समय में, जब बैंकिंग उद्योग निरंतर परिवर्तन और प्रतिस्पर्धा के दौर से गुजर रहा है, ऐसे में सकारात्मक सोच, टीम भावना और नवाचार की अत्यंत आवश्यकता है। “यूको अभिव्यक्ति” जैसे मंच हमें न केवल मानसिक रूप से सशक्त बनाते हैं, बल्कि संगठन के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को भी और मजबूत करते हैं। यह पत्रिका हमें यह स्मरण कराती है कि हम सभी एक साझा लक्ष्य की दिशा में कार्य कर रहे हैं।

मैं इस अवसर पर कानपुर अंचल के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके निरंतर परिश्रम, समर्पण और उपलब्धियों के लिए बधाई देता हूँ। वित्तीय लक्ष्यों की प्राप्ति, ग्राहक सेवा में सुधार, ऋण विस्तार, वसूली, डिजिटल बैंकिंग को बढ़ावा देने तथा बैंक की साख को सुदृढ़ करने में आप सभी का योगदान सराहनीय रहा है। यह सामूहिक प्रयासों का ही परिणाम है कि अंचल निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य और निरंतर सफलता की कामना के साथ—

सप्रेम धन्यवाद।





विभाग प्रमुख का सन्देश

प्रियंका यादव

प्रिय सहकर्मियों,

सप्रेम नमस्कार।

यूको बैंक, कानपुर अंचल कार्यालय की छमाही हिंदी गृह पत्रिका "यूको अभिव्यक्ति" के नवीन अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं अंचल के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

यह पत्रिका केवल एक औपचारिक प्रकाशन नहीं, बल्कि हमारे अंचल की बौद्धिक चेतना, कार्यसंस्कृति और रचनात्मक सोच का सजीव दस्तावेज है। राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग के माध्यम से यह पत्रिका हमें एक-दूसरे से जोड़ने का कार्य करती है।

"यूको अभिव्यक्ति" अपने नाम के अनुरूप विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त मंच है। इसमें प्रकाशित रचनाएँ यह प्रमाणित करती हैं कि हमारे अधिकारी एवं कर्मचारी न केवल अपने दायित्वों के प्रति सजग हैं, बल्कि साहित्यिक अभिरुचि और सृजनात्मक क्षमता से भी संपन्न हैं।

इस अंक में सम्मिलित निबंध, लेख, कविताएँ एवं अन्य रचनात्मक प्रस्तुतियाँ विषयों की विविधता, भाषा की सशक्तता और विचारों की परिपक्वता को दर्शाती हैं। सामाजिक सरोकार, कार्यानुभव, प्रेरणादायी प्रसंग और समसामयिक विषयों की झलक इन रचनाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

मैं पत्रिका में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों की सराहना करती हूँ। आपकी लेखनी ने यह सिद्ध किया है कि हिंदी केवल कार्य-भाषा ही नहीं, बल्कि भावों और विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने का समर्थ माध्यम है। आपकी सहभागिता इस पत्रिका को समृद्ध बनाती है और अन्य सहकर्मियों को भी रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करती है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग हमारे लिए केवल संवैधानिक दायित्व नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान और आत्मीय संवाद का माध्यम भी है। यूको बैंक में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं और "यूको अभिव्यक्ति" इन प्रयासों

को नई दिशा और ऊर्जा प्रदान करती है।

यह पत्रिका अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में सोचने, लिखने और अपने विचार साझा करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक और तकनीकी रूप से उन्नत बैंकिंग परिवेश में कार्य करते हुए हमें अपनी भाषाई और सांस्कृतिक विरासत को भी सहेजकर रखना है। राजभाषा हिंदी इस दिशा में हमें जोड़ने और सशक्त बनाने का कार्य करती है। "यूको अभिव्यक्ति" इस प्रयास की एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जो कार्य और रचनात्मकता के बीच सेतु का कार्य करती है।



मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के सहयोग से "यूको अभिव्यक्ति" भविष्य में और अधिक समृद्ध और प्रभावशाली बनेगी। यह पत्रिका न केवल हमारे अंचल की उपलब्धियों का दर्पण होगी, बल्कि रचनात्मक अभिव्यक्ति और राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार का सशक्त माध्यम भी सिद्ध होगी।

अंत में, एक बार पुनः मैं "यूको अभिव्यक्ति" के इस अंक के प्रकाशन पर संपादक मंडल, सभी रचनाकारों एवं सहयोगियों को हार्दिक बधाई देती हूँ।

मेरी शुभकामनाएँ हैं कि यह पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे और हम सभी को नई ऊर्जा व प्रेरणा प्रदान करती रहे।

हिंदी हमारी राजभाषा होने के साथ मातृभाषा भी है और मई आशा करती हूँ कि हमारी शाखाएं काम-काज में हिंदी का प्रयोग को निरंतर बढ़ावा देती रहेंगी।

सादर धन्यवाद।





संपादकीय

तरुण कुमार सिंह, राजभाषा अधिकारी, कानपुर

“अनवरत विचारों की असंख्य अठखेलियाँ,
हृदय की मानस दशा पलट देती हैं
जो बात निकलती है एक बार लेखनी से,
वो दशकों तक नए विचारों को बल देती हैं”

“अभिव्यक्ति” केवल शब्दों का संकलन नहीं होती, बल्कि वह भावनाओं, विचारों, प्रयासों और सहभागिता की जीवंत धारा होती है। यूको बैंक, कानपुर अंचल की छमाही हिंदी गृह पत्रिका “यूको अभिव्यक्ति” इसी भावना की सशक्त प्रस्तुति है। इस नवीन अंक के माध्यम से एक बार फिर हमारे अंचल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक ऊर्जा, भाषायी प्रतिबद्धता और सामूहिक प्रयासों का सुंदर समागम देखने को मिला है।

इस बार विभिन्न अवसरों पर अंचल के सभी कार्यालयों और शाखाओं द्वारा जो उत्साह, सक्रियता और सहभागिता प्रदर्शित की गई, वह अत्यंत प्रशंसनीय एवं प्रेरणादायी रही। उसके लिए आप सभी को धन्यवाद।

प्रतियोगिताओं और पत्रिका हेतु प्राप्त प्रविष्टियाँ यह सिद्ध करती हैं कि हमारे सहकर्मी हिंदी के प्रति न केवल सजग हैं, बल्कि उसे सृजनात्मक रूप में अपनाने के लिए भी तत्पर हैं। इसके अतिरिक्त, अखिल भारतीय हिंदी निबंध प्रतियोगिताओं में हमारे अंचल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सहभागिता भी गर्व का विषय है। राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेना न केवल व्यक्तिगत उपलब्धि है, बल्कि यह हमारे अंचल की भाषायी चेतना और बौद्धिक क्षमता का भी परिचायक है। इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को उनकी मेहनत, लगन और उत्साह के लिए हार्दिक धन्यवाद एवं शुभकामनाएँ।

अंचल कार्यालय और शाखाओं ने नराकास स्तर पर भी उत्कृष्ट कार्य किया। विशेषकर राजभाषा शील्ड में निम्न शाखाओं को इस छमाही में पुरस्कृत किया गया, जो प्रशंसनीय हैं -

1. मलासा शाखा—नराकास कानपुर देहात द्वारा तृतीय पुरस्कार
2. हसवा शाखा— नराकास फतेहपुर द्वारा द्वितीय पुरस्कार
3. बेलनगंज शाखा—नराकास आगरा द्वारा प्रथम पुरस्कार

विभिन्न “यूको अभिव्यक्ति” के इस अंक में प्रकाशित लेखों, निबंधों, कविताओं, विचारों एवं चित्रों ने पत्रिका को एक जीवंत स्वरूप प्रदान किया है। जिन सहकर्मियों की रचनाएँ इस अंक में स्थान पा सकीं, वे निरसंदेह बधाई के पात्र हैं। आपकी रचनाएँ न केवल आपकी व्यक्तिगत सोच को दर्शाती हैं, बल्कि अन्य पाठकों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनती हैं। संपादकीय मंडल उन सभी सहकर्मियों का भी धन्यवाद करता है, जिनकी रचनाएँ इस बार स्थान नहीं पा सकीं, परंतु जिनका उत्साह और सहभागिता भविष्य के अंकों के लिए मार्ग प्रशस्त करती है। आपकी प्रविष्टियाँ हमारे लिए अत्यंत मूल्यवान हैं और आने वाले अंकों में उन्हें समुचित स्थान देने का प्रयास अवश्य किया जाएगा।

आने वाली छमाही के लिए हम सभी से यह सादर आग्रह करते हैं कि पिछली छमाही की तरह ही आगे भी राजभाषा हिंदी में अपनी सहभागिता निरंतर बनाए रखें। यह पत्रिका तभी सार्थक होगी, जब इसमें अंचल के प्रत्येक विभाग और प्रत्येक शाखा की आवाज़ सम्मिलित होगी।

अंत में, संपादक के रूप में मैं एक बार पुनः हिंदी पखवाड़ा, विभिन्न प्रतियोगिताओं, अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिताओं तथा इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी अधिकारियों, कर्मचारियों और प्रतिभागियों का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ। आपका सहयोग ही हमारी सबसे बड़ी प्रेरणा है।

आशा है कि आने वाली छमाही में भी आप सभी इसी उत्साह, ऊर्जा और प्रतिबद्धता के साथ राजभाषा हिंदी के प्रयोग और “यूको अभिव्यक्ति” के माध्यम से अपनी रचनात्मक सहभागिता सुनिश्चित करेंगे।

सहयोग, सहभागिता और सृजन—इन्हीं मूल्यों के साथ “यूको अभिव्यक्ति” निरंतर आगे बढ़ती रहे, यही हमारी कामना है।





जय भूषण भरमौरिया
उप अंचल प्रमुख
कानपुर अंचल कार्यालय



जतिंदर सिंह
मुख्य प्रबंधक
रिटेल् हब



शुभकामना सन्देश

‘यूको अभिव्यक्ति’ शब्दों का संकलन नहीं, बल्कि हमारे साथियों की सृजनात्मकता, संवेदनशीलता एवं बौद्धिक अभिव्यक्ति का सशक्त मंच है।

इस अंक में हमारे साथियों द्वारा लिखित लेख, कविताएँ, संस्मरण एवं विविध रचनाएँ न केवल पठनीय हैं, बल्कि प्रेरणादायी भी हैं। साथ ही साथियों एवं उनके परिजनों द्वारा बनाई गई चित्रकारी एवं कलात्मक प्रस्तुतियाँ पत्रिका को और अधिक आकर्षक एवं जीवंत बनाती हैं।

विभिन्न महत्वपूर्ण एवं समसामयिक विषयों पर लिखे गए निबंध इस अंक को अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं मूल्यवान स्वरूप प्रदान करते हैं। यह प्रयास निश्चित रूप से साहित्य, भाषा एवं रचनात्मक अभिरुचियों को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

पत्रिका में अंचल कार्यालय, हब और शाखाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया, जो उनके हिंदी के प्रति समर्पण और लगाव का स्पष्ट द्योतक है।

झलकियाँ खंड विगत छमाही में की गई विभिन्न कार्यक्रमों को बखूबी दर्शाने में सफल रहा है। पत्रिका का कवर पृष्ठ पंछी विहार, उन्नाव का मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक एवं राजभाषा अधिकारी तरुण कुमार सिंह को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल शुभकामनाएँ। साथ ही इस रचनात्मक यात्रा से जुड़े सभी सहयोगियों को भी साधुवाद।

ईश्वर से कामना है कि ‘यूको अनुगूज’ निरंतर नई ऊँचाइयों को प्राप्त करे तथा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बने।

यूको बैंक कानपुर अंचल की छमाही पत्रिका ‘यूको अनुगूज’ के अंक-3 के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। यह पत्रिका न केवल साहित्यिक अभिरुचियों को मंच प्रदान करती है, बल्कि ज्ञान, संस्कृति एवं सृजनशीलता का सुंदर संगम भी प्रस्तुत करती है।

पत्रिका के प्रारंभ में प्रस्तुत “साहित्य के स्तंभ” खंड विशेष रूप से अत्यंत सराहनीय है, जिसके माध्यम से हमें कानपुर एवं आसपास के क्षेत्र के प्रसिद्ध साहित्यकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को जानने का अवसर प्राप्त होता है। इस अंक में महान साहित्यकार भगवती चरण वर्मा जी के जीवन एवं उनकी उत्कृष्ट रचनाओं के रसास्वादन का अवसर मिलना पाठकों के लिए अत्यंत आनंददायक एवं ज्ञानवर्धक है।

साथियों द्वारा लिखित लेख, कविताएँ, संस्मरण एवं विचारोत्तेजक निबंध पत्रिका को समृद्ध एवं मूल्यवान बनाते हैं। साथ ही हिंदी शब्दावली का खंड अत्यंत उपयोगी एवं व्यवहारिक है, जो राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि और समझ को और अधिक सुदृढ़ करता है।

चित्रकारी का खंड भी अत्यंत सुंदर एवं मनमोहक है, जो पत्रिका की रचनात्मकता को नई ऊँचाइयाँ प्रदान करता है। विशेष रूप से पत्रिका का आकर्षक आवरण इस भीषण गर्मी में मानो शीतलता का अहसास कराता है तथा उन्नाव क्षेत्र स्थित पंछी विहार की अद्भुत एवं प्राकृतिक झांकी प्रस्तुत कर मन को मोह लेता है।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक एवं राजभाषा अधिकारी तरुण कुमार सिंह को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल शुभकामनाएँ। साथ ही इस उत्कृष्ट प्रयास से जुड़े सभी रचनाकारों एवं सहयोगियों को साधुवाद।



निरुपमा
मुख्य प्रबंधक
कानपुर अंचल कार्यालय

ग्रीष्म ऋतु



चंद्रभूषण
मुख्य प्रबंधक
कानपुर अंचल कार्यालय

वक्त ही तो है



वक्त! वक्त ही तो है,
गुजरना ही होगा इसे हर हाल में।
फिर वक्त अच्छा क्या, बुरा क्या?
जिंदगी कटती ही है समय की चाल में।

कल जवां थे, उमंगें थी, नशा था
आज जीता हूँ दुनियादारी के जंजाल में।

वैसे तो बरहमन ने कहा सब ठीक ठाक है
पर बदगुमां होऊं ऐसा कुछ न रहा इस साल में।

कैसे कटे है जिंदगी क्या क्या कहुँ तुझे



छोड़ो भी जाने दो क्या रखा इस सवाल में।

तुम जो चले गये तो सबको भुला दिया,
फिर याद क्यों तू आई अब इस फटेहाल में।

हम जैसा एक वक्त में था कौन दूसरा,
अब तो बड़े बड़े तैरे क्या धरा मेरी मिशाल में।

चंद्र के कटे है जिंदगी मुफलिशी के दौर में
रखा है इश्क मे क्या, क्यों पड़े इस बवाल में।

यहाँ कहीं आम की बौरें महक रही हैं
कहीं बाग़ में कोयल भी चहक रही है

रूँ तो ग्रीष्म ऋतु का सूरज ना-गवार है
फिर भी कभी-कभी बरखा से बहार है

जब रात में चलती हैं कुछ तेज हवाएं
बाग़ में बिछ जाती हैं कच्ची अमियाएं

इस जामुन के पेड़ का भी है कुछ तो कहना
सुबह उठो तो मिल जाए जमुनिया का बिछोना

नींबू पर भी छाई है फलों की बहार
करौंदों पर अभी लगे हैं फूल हजार

सिंदूरी और तोतापरी आम के मेले हैं
बाजारों में लगे ठेलों पर पके हुए बेलें हैं

क्या बताएं इस ऋतु का यह हाल है
सब ठीक तो है पर गर्मी से बेहाल हैं



विशाल अग्रवाल
मुख्य प्रबंधक
कृषि व एसएमई हब

मेरे घर की गली

थक चुकी थी आँखें,
शहर की रोशनी देख देखकर
भीड़ में भी खुद को,
तन्हा तन्हा देखकर

वो फाइलें वो मीटिंग्स,
वो घड़ी की टिक टिक का शोर
खींच लाया है दिल को,
अब अपनी मिट्टी की ओर

टिकट के उस कागज़ में,
जैसे पूरी आजादी है
कियाए के घर से दूर,
अपनी भी एक आबादी है



स्टेशन की सरगर्मी में,
अब थकान नहीं लगती
घर पहुँचने की जल्दी में,
अब रात भी जवान नहीं लगती

माँ के हाथ की चाय,
और आँगन की वो ठंडी छाँव
भुलवा देती है पल भर में,
परदेस के सारे घाव

दूसरे शहर की चकाचौंध से,
ये सादगी भली है
सुकून की असली राह तो,
मेरे घर की ही गली है



मनोरंजन कुमार
मुख्य प्रबंधक
रीटेल हब

श्री राधा रानी



बरसाने की रानी राधा,
तेरी महिमा न्यारी है,
तेरे चरणों की धूल भी
लगती हमको प्यारी है।

तेरी कृपा की छाँव मिले तो
जीवन खिल सा जाता है,
तेरा नाम जुबों पे आए
मन मंदिर मुस्कताता है।

श्याम भी तेरे प्रेम बिना
अधूरे से लगते हैं,
तेरे संग ही वृंदावन के
सपने पूरे सजते हैं।

राधे-राधे जपते-जपते
मन को शांति मिलती है,
तेरी भक्ति की गंगा से
हर पीड़ा ही धुलती है।

तेरी आँखों की ममता में
सारा जग खो जाता है,
जो भी तेरे द्वार पे आए
खाली कब लौट पाता है।

तेरी करुणा की एक किरण
अंधियारा हर लेती है,
राधा नाम की मधुर धुन
हर धड़कन में रहती है।



वीरेंद्र सिंहाण
मुख्य प्रबंधक
सुरक्षा विभाग

स्वस्थ शरीर

मनुष्य के जीवन में स्वास्थ्य सबसे बड़ा धन माना गया है। यदि शरीर स्वस्थ हो तो जीवन के हर क्षेत्र में सफलता, उत्साह और सकारात्मकता स्वतः दिखाई देने लगती है। एक स्वस्थ शरीर केवल बीमारियों से दूर रहने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह बेहतर जीवनशैली का मूल आधार भी है।

स्वस्थ शरीर व्यक्ति को ऊर्जा और आत्मविश्वास प्रदान करता है। जब शरीर स्वस्थ रहता है, तब व्यक्ति अपने दैनिक कार्य पूरे मनोयोग और उत्साह के साथ कर पाता है। पढ़ाई, नौकरी, व्यापार या घरेलू जिम्मेदारियाँ—हर क्षेत्र में उसकी कार्यक्षमता बढ़ जाती है। इसके विपरीत अस्वस्थ शरीर व्यक्ति को थका हुआ, चिड़चिड़ा और निराश बना देता है।

अच्छा स्वास्थ्य मानसिक संतुलन बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नियमित व्यायाम, संतुलित भोजन और पर्याप्त नींद मन को शांत और प्रसन्न रखते हैं। स्वस्थ व्यक्ति तनाव और कठिन परिस्थितियों का सामना अधिक धैर्य और सकारात्मक सोच के साथ कर पाता है। यही सकारात्मकता उसके संबंधों और सामाजिक जीवन को भी मधुर बनाती है।

स्वस्थ शरीर हमारी जीवनशैली में अनुशासन लाता है। समय पर उठना, पौष्टिक भोजन लेना, योग और व्यायाम करना जैसी आदतें व्यक्ति को नियमित और व्यवस्थित बनाती हैं। ऐसी जीवनशैली न केवल शरीर को मजबूत बनाती है, बल्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व में भी निखार लाती है। आज के आधुनिक युग में लोग भागदौड़ और तनाव भरे जीवन में स्वास्थ्य की उपेक्षा कर रहे हैं। जंक फूड, अनियमित दिनचर्या और शारीरिक गतिविधियों की कमी अनेक बीमारियों को जन्म दे रही है। इसलिए आवश्यक है कि हम अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें और संतुलित जीवन अपनाएँ।

अंततः कहा जा सकता है कि स्वस्थ शरीर ही सुखी और सफल जीवन की कुंजी है। यदि शरीर स्वस्थ है, तो जीवन के हर रंग का आनंद लिया जा सकता है। इसलिए हमें अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहकर ऐसी जीवनशैली अपनानी चाहिए, जो हमें शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से समृद्ध बनाए।



आशुतोष शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक
रीटेल हब

चिटू का रोजगार

चिटू एक छोटे से गाँव में अपने माता-पिता के साथ रहता था। उसके पिता किसान थे और बड़ी मेहनत से घर चलाते थे। चिटू पढ़ाई में अच्छा था, इसलिए उसके माता-पिता का सपना था कि वह पढ़-लिखकर कोई अच्छी नौकरी करे और परिवार की गरीबी दूर करे। समय बीता और चिटू ने अपनी पढ़ाई पूरी कर ली। डिग्री हाथ में आते ही वह बड़े उत्साह से शहर नौकरी खोजने निकल पड़ा। हर सुबह वह साफ कपड़े पहनकर दफतर-दफतर जाता, आवेदन देता और उम्मीद लेकर लौटता। लेकिन हर जगह एक ही जवाब मिलता—

“अनुभव चाहिए।”

कुछ लोग कहते, “इतनी छोटी डिग्री में नौकरी मिलना मुश्किल है।”

यह सुनकर चिटू का मन टूट जाता।

कई महीने बीत गए। जब के पैसे खत्म होने लगे। उसने अपने पिता से और पैसे माँगने में शर्म महसूस की। एक दिन उदास होकर वह बस स्टैंड पर बैठा था। तभी उसने देखा कि सुबह-सुबह लोग चाय के लिए लंबी लाइन में खड़े हैं। आसपास केवल एक छोटी दुकान थी, जहाँ बहुत भीड़ रहती थी।

चिटू के मन में अचानक एक विचार आया। उसने सोचा,

“जब नौकरी नहीं मिल रही, तो क्यों न खुद का काम शुरू किया जाए?”

उसने अपने बचे हुए पैसे और माँ द्वारा दिए गए थोड़े से रुपयों से एक छोटा-सा चाय का ठेला खरीद लिया। अगले ही दिन उसने बस स्टैंड के पास अपना काम शुरू कर दिया। शुरुआत में उसे थोड़ी शर्म महसूस हुई, क्योंकि गाँव के कुछ लोग उसे देखकर बातें बनाते थे।

कुछ ही दिनों में उसकी चाय पूरे इलाके में मशहूर हो गई। लोग कहते,

“चिटू की चाय पी लो, दिन अच्छा गुजरता है।”

एक साल के भीतर चिटू ने एक छोटी दुकान किराए पर ले ली। उसने दुकान का नाम रखा— “चिटू टी स्टॉल”

अब वह अकेला नहीं था। उसने गाँव के दो बेरोजगार लड़कों को भी अपने साथ काम पर रख लिया। चिटू ने सभी के सामने एक मिसाल पेश कर दी कि “रोजगार छोटा या बड़ा नहीं होता। इंसान की मेहनत और ईमानदारी ही उसे बड़ा बनाती है।”



दीपा शुक्ला

वरिष्ठ प्रबंधक

कानपुर अंचल कार्यालय

स्थान: बैंक शाखा का ग्राहक सेवा काउंटर
पात्र: ग्राहक (रमेश), बैंकर (शाखा अधिकारी)

रमेश: नमस्ते सर। आजकल हर तरफ डिजिटल फ्रॉन्ट की खबरें आ रही हैं—कहीं ओटीपी लेकर पैसे निकाल लिए, कहीं यूपीआई से ठगी हो गई। सच कहूँ तो डर लगने लगा है। क्या सच में इतने खतरे हैं?

बैंकर: नमस्ते रमेश जी। आपकी चिंता बिल्कुल जायज़ है। डिजिटल सुविधाओं ने हमारी जिंदगी आसान बनाई है, लेकिन इनके साथ सावधानी भी उतनी ही जरूरी है। थोड़ी समझदारी और जागरूकता से आप इन खतरों से आसानी से बच सकते हैं।

रमेश: सर, सबसे पहले तो ये बताइए कि ये डिजिटल फ्रॉन्ट होते कैसे हैं?

बैंकर: देखिए, डिजिटल ठग अक्सर लोगों की लापरवाही और जल्दबाज़ी का फायदा उठाते हैं। कुछ आम तरीके हैं—

1. फिशिंग :

आपको बैंक, ई-कॉमर्स या सरकारी संस्था के नाम से मैसेज या ईमेल आता है, जिसमें लिखा होता है कि “आपका अकाउंट बंद हो जाएगा” या “केवाईसी अपडेट करें”। साथ में एक लिंक दिया होता है। जैसे ही आप उस लिंक पर क्लिक करके अपनी जानकारी डालते हैं, आपकी डिटेल्स ठगों तक पहुँच जाती हैं।

2. ओटीपी फ्रॉन्ट:

कोई व्यक्ति खुद को बैंक कर्मचारी बताकर कॉल करता है और कहता है कि आपका अकाउंट अपडेट करना है या कोई समस्या है। फिर वह ओटीपी मांगता है। जैसे ही आप ओटीपी बताते हैं, आपके खाते से पैसे निकल जाते हैं।

3. यूपीआई कलेक्ट रिवेस्ट फ्रॉन्ट:

कई बार आपको पैसे मिलाने के नाम पर एक रिवेस्ट भेजी जाती है। आप सोचते हैं कि पैसे आ रहे हैं और गलती से पिन डाल देते हैं। असल में आप पैसे भेज देते हैं।

4. फेक कस्टमर केयर नंबर:

गूगल पर कई नकली नंबर डाले जाते हैं। ग्राहक असली समझकर कॉल करते हैं और अपनी जानकारी साझा कर देते हैं।

5. स्क्रीन शेयरिंग/रिमोट ऐप फ्रॉन्ट:

आपको एनी डेस्क, टीम व्हायर जैसे ऐप डाउनलोड करने को कहा जाता है। एक बार इंस्टॉल करने के बाद ठग आपकी मोबाइल

स्क्रीन देख सकते हैं और आपके बैंकिंग ऐप तक पहुँच बना लेते हैं।

6. लॉटरी/इनाम का लालच:

मैसेज आता है कि “आपने 25 लाख की लॉटरी जीती है” या “आपको इनाम मिला है”। फिर प्रोसेसिंग फीस के नाम पर पैसे मांगे जाते हैं।

रमेश: सर, ये तो बहुत खतरनाक है। हम आम लोग कैसे पहचानें कि क्या सही है और क्या गलत?

बैंकर: बहुत आसान है। कुछ संकेत हमेशा याद रखें—

कोई भी बैंक कभी फोन पर ओटीपी, पिन, पासवर्ड या सीवीवी नहीं मांगता।

अगर कोई आपको जल्दी-जल्दी निर्णय लेने को कहे, तो समझ जाइए कि कुछ गड़बड़ है।

अनजान लिंक, ईमेल या मैसेज से दूरी बनाए रखें।

“बहुत अच्छा ऑफर” या “फ्री में पैसे” जैसी चीजें अक्सर धोखा होती हैं।

रमेश: सर, अगर मैं ऑनलाइन शॉपिंग करता हूँ या यूपीआई इस्तेमाल करता हूँ, तो क्या सावधानी रखनी चाहिए?

बैंकर: बिल्कुल—

केवल विश्वसनीय वेबसाइट और ऐप का उपयोग करें।

यूपीआई पिन कभी किसी को न बताएं।

पैसे पाने के लिए पिन डालने की जरूरत नहीं होती।

मोबाइल में हमेशा स्क्रीन लॉक रखें।

बैंक ऐप और मोबाइल को अपडेट रखते रहें।

पब्लिक वाई-फाई पर बैंकिंग ट्रांजैक्शन न करें।

रमेश: सर, अगर गलती से मेरे साथ फ्रॉन्ट हो जाए तो क्या करना चाहिए?

बैंकर: सबसे पहले घबराइए नहीं, तुरंत कार्रवाई कीजिए—

तुरंत अपने बैंक को सूचित करें और कार्ड/यूपीआई ब्लॉक करवाएं।

1930 (राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन) पर तुरंत कॉल करें।

साइबर क्राइम की आधिकारिक साइट पर ऑनलाइन शिकायत दर्ज करें।

जितनी जल्दी आप रिपोर्ट करेंगे, पैसे वापस मिलने की संभावना उतनी ही ज्यादा होगी।

रमेश: सर, क्या बैंक भी ग्राहकों को जागरूक करने के लिए कुछ करता है?

बैंकर: जी हाँ, बैंक समय-समय पर एसएमएस, ईमेल और पोस्टर के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाते हैं। हम ग्राहकों को सलाह देते हैं कि वे इन संदेशों को ध्यान से पढ़ें और सतर्क रहें।

रमेश: अब मुझे समझ आ गया कि डिजिटल सुविधा जितनी आसान है, उतनी ही सावधानी भी जरूरी है।

बैंकर: बिल्कुल सही कहा आपने। आज के समय में जागरूक ग्राहक ही सुरक्षित ग्राहक है।

निष्कर्ष:

डिजिटल युग में बैंकिंग सुविधाएं तेजी से बढ़ रही हैं, लेकिन इनके साथ साइबर अपराध भी बढ़ रहे हैं। थोड़ी सी लापरवाही बड़ा नुकसान कर सकती है, जबकि थोड़ी सी सावधानी हमें सुरक्षित रख सकती है। इसलिए हमेशा सतर्क रहें, किसी भी संदिग्ध गतिविधि से बचें और जरूरत पड़ने पर तुरंत सही कदम उठाएं।

“सतर्कता ही सुरक्षा है—जागरूक बनें, सुरक्षित रहें।”





अमित कुमार यादव
सहायक प्रबंधक
कानपुर अंचल कार्यालय

वेद और विज्ञान

आज का युग विज्ञान, तकनीक और आधुनिकता का युग है। मानव ने चंद्रमा तक पहुँच बनाई, कृत्रिम बुद्धिमत्ता विकसित की, और चिकित्सा विज्ञान में अद्भुत प्रगति की। मोबाइल, इंटरनेट और डिजिटल तकनीकों ने जीवन को अत्यंत तेज़ और सुविधाजनक बना दिया है। परंतु इस भौतिक प्रगति के साथ-साथ समाज अनेक समस्याओं से भी घिरता जा रहा है। मानसिक तनाव, अवसाद, पारिवारिक विघटन, पर्यावरण प्रदूषण, नैतिक पतन और जीवन में असंतोष आज के आधुनिक समाज की बड़ी चुनौतियाँ बन चुकी हैं।

ऐसे समय में भारत की प्राचीन वैदिक संस्कृति केवल धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक और संतुलित जीवन-पद्धति के रूप में पुनः विश्व के सामने उभर रही है। हजारों वर्ष पूर्व रचे गए वेद केवल पूजा-पाठ के ग्रंथ नहीं हैं, बल्कि उनमें मानव जीवन, प्रकृति, चिकित्सा, गणित, खगोल विज्ञान, ध्वनि विज्ञान और आध्यात्मिक ज्ञान का गहरा समन्वय मिलता है।

आज का युवा तर्क, प्रमाण और वैज्ञानिक सोच को महत्व देता है। इसलिए यह आवश्यक है कि वेदों को केवल आस्था के आधार पर नहीं, बल्कि उनके वैज्ञानिक पक्ष के साथ समझाया जाए। जब युवा यह जानता है कि उसकी संस्कृति में विज्ञान, अनुशासन और जीवन प्रबंधन का गहन ज्ञान पहले से मौजूद था, तब उसके भीतर अपनी परंपरा के प्रति गर्व उत्पन्न होता है।

वेद : मानव सभ्यता का प्राचीन ज्ञानकोष

“वेद” शब्द संस्कृत की “विद्” धातु से बना है, जिसका अर्थ है — जानना या ज्ञान प्राप्त करना। वेदों को मानव सभ्यता का सबसे प्राचीन ज्ञानभंडार माना जाता है। चार प्रमुख वेद हैं—

ऋग्वेद: ऋग्वेद में प्रकृति, देवताओं और ब्रह्मांड का वर्णन मिलता है।

यजुर्वेद: यजुर्वेद में यज्ञ और कर्म की व्यवस्था है।

सामवेद: सामवेद संगीत और ध्वनि विज्ञान से जुड़ा है।

अथर्ववेद: अथर्ववेद में चिकित्सा, स्वास्थ्य और सामाजिक जीवन का ज्ञान मिलता है।

वेदों की विशेषता यह है कि वे केवल धार्मिक कर्मकांड तक सीमित नहीं हैं। उनमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित ज्ञान समाहित है। यही कारण है कि आज भी विश्व के अनेक वैज्ञानिक, दार्शनिक और शोधकर्ता वैदिक साहित्य का अध्ययन कर रहे हैं।

वेद और आधुनिक विज्ञान का संबंध

बहुत से लोग यह मानते हैं कि विज्ञान और धर्म एक-दूसरे के विरोधी हैं, परंतु भारतीय वैदिक परंपरा इस धारणा को गलत सिद्ध करती है। वेदों में अनेक ऐसे विचार मिलते हैं जो आधुनिक विज्ञान के सिद्धांतों से मेल खाते हैं।

1. ब्रह्मांड की उत्पत्ति और वैदिक दृष्टिकोण

ऋग्वेद के “नासदीय सूक्त” में सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में अत्यंत गहन विचार प्रस्तुत किए गए हैं। उसमें कहा गया है कि प्रारंभ में न अस्तित्व था, न अनस्तित्व; न आकाश था और न पृथ्वी। यह वर्णन आधुनिक “बिग बैंग थ्योरी” की अवधारणा से आश्चर्यजनक समानता रखता है।

आज विज्ञान मानता है कि पूरा ब्रह्मांड एक अत्यंत सूक्ष्म और ऊर्जा-युक्त बिंदु से उत्पन्न हुआ। वैदिक साहित्य में भी “हिरण्यगर्भ” अर्थात् स्वर्ण अंड से सृष्टि की उत्पत्ति का उल्लेख मिलता है। यह दर्शाता है कि प्राचीन भारतीय ऋषि ब्रह्मांड के रहस्यों पर गहन चिंतन करते थे।

2. खगोल विज्ञान और ग्रहों का ज्ञान

प्राचीन भारत में खगोल विज्ञान अत्यंत विकसित था।

आर्यभट्ट ने हजारों वर्ष पहले यह बताया था कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है। उस समय दुनिया के कई भागों में लोग पृथ्वी को स्थिर मानते थे। उन्होंने ग्रहण के वैज्ञानिक कारण भी बताए और गणितीय गणनाओं द्वारा ग्रहों की स्थिति का अनुमान लगाया। यह भारतीय वैज्ञानिक परंपरा की महान उपलब्धि थी। वेदों में सूर्य को संपूर्ण ऊर्जा का स्रोत बताया गया है। आज आधुनिक विज्ञान भी स्वीकार करता है कि पृथ्वी पर जीवन और ऊर्जा का मुख्य आधार सूर्य ही है।

आयुर्वेद : प्राचीन भारत की वैज्ञानिक चिकित्सा प्रणाली

आज पूरी दुनिया प्राकृतिक चिकित्सा और आयुर्वेद की ओर आकर्षित हो रही है। इसका मुख्य कारण यह है कि आधुनिक जीवनशैली से उत्पन्न रोगों का समाधान आयुर्वेद अधिक संतुलित तरीके से प्रस्तुत करता है।

चरक संहिता और सुश्रुत संहिता चिकित्सा विज्ञान के महान ग्रंथ माने जाते हैं। सुश्रुत को शल्य चिकित्सा का जनक कहा जाता है। उन्होंने प्लास्टिक सर्जरी, हड्डी उपचार, प्रसूति विज्ञान और शल्य क्रियाओं का विस्तृत वर्णन किया था। यह तथ्य आधुनिक चिकित्सा जगत को भी आश्चर्यचकित करता है। आयुर्वेद केवल रोग का उपचार नहीं करता, बल्कि शरीर, मन और आत्मा के संतुलन पर बल देता है। इसमें दिनचर्या, भोजन, योग और प्राकृतिक जीवनशैली को स्वास्थ्य का आधार माना गया है।

योग : शरीर और मन का वैज्ञानिक संतुलन

आज पूरी दुनिया योग को अपना रही है। अमेरिका, यूरोप और जापान जैसे देशों में लाखों लोग प्रतिदिन योग और ध्यान करते हैं। पतंजलि द्वारा रचित योगसूत्र मानव जीवन के लिए वैज्ञानिक मार्गदर्शक माने जाते हैं। योग केवल व्यायाम नहीं है; यह शरीर, मन और आत्मा को संतुलित करने की प्रक्रिया है। वैज्ञानिक शोधों में यह सिद्ध हुआ है कि—

योग तनाव और चिंता कम करता है।

ध्यान मानसिक एकाग्रता बढ़ाता है।

प्राणायाम फेफड़ों की क्षमता में सुधार करता है।

योग से रक्तचाप और मधुमेह नियंत्रित करने में सहायता मिलती है।

इसी महत्व को देखते हुए अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पूरी दुनिया में मनाया जाता है।

आज का युवा यदि नियमित योग अपनाए, तो वह मानसिक रूप से अधिक मजबूत, अनुशासित और आत्मविश्वासी बन सकता है।

मंत्र, ध्वनि विज्ञान और मानसिक प्रभाव

वैदिक संस्कृति में मंत्रों के उच्चारण को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। आधुनिक विज्ञान भी यह स्वीकार करता है कि अलग अलग आवृत्ती (frequency) की ध्वनि तरंगें मानव मस्तिष्क और शरीर को प्रभावित करती हैं। इसकी अलग एक चिकित्सीय पद्धति की शाखा है जो आज कल पाश्चात्य समाज में काफी प्रचलित भी है।

“ॐ” का उच्चारण मन को शांत करने और तनाव कम करने में सहायक माना जाता है। कई वैज्ञानिक अध्ययनों में पाया गया है कि इसके नियमित उच्चारण से मानसिक स्थिरता और ध्यान क्षमता बढ़ती है।

सामवेद में संगीत और स्वर विज्ञान का अद्भुत समन्वय मिलता है। यही कारण है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत को भी मानसिक शांति और ध्यान से जोड़ा जाता है।

पर्यावरण संरक्षण का वैदिक दृष्टिकोण

आज विश्व ग्लोबल वार्मिंग, जल संकट और प्रदूषण जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है। परंतु वैदिक संस्कृति हजारों वर्ष पहले ही प्रकृति संरक्षण का संदेश दे चुकी थी। भारतीय परंपरा में— पृथ्वी को माता कहा गया नदियों को देवी माना गया

वृक्षों की पूजा की गई

पशु-पक्षियों की रक्षा को धर्म समझा गया

यह केवल धार्मिक भावना नहीं थी, बल्कि प्रकृति के संरक्षण का वैज्ञानिक तरीका था। जब मनुष्य प्रकृति को पूजनीय मानता है, तब वह उसका शोषण नहीं करता। आज “सतत विकास” अर्थात् संतुलित विकास की जो अवधारणा विश्व में लोकप्रिय है, उसका मूल भाव वैदिक संस्कृति में पहले से मौजूद था।

वैदिक गणित : तेज बुद्धि और तार्किक क्षमता का आधार

भारती कृष्ण तीर्थ द्वारा पुनः लोकप्रिय बनाई गई वैदिक गणित पद्धति आज विश्वभर में प्रसिद्ध हो रही है।

इसकी विशेषता यह है कि कठिन गणनाएँ भी सरल और तेज़ तरीके से की जा सकती हैं। इससे विद्यार्थियों की मानसिक क्षमता और तार्किक सोच विकसित होती है। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों के लिए वैदिक गणित अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रही है। आज कई विदेशी विद्यालयों में भी इसे पढ़ाया जा रहा है।

आधुनिक युवा और वैदिक संस्कृति

आज का युवा पश्चिमी संस्कृति, सोशल मीडिया और भौतिक जीवनशैली से अत्यधिक प्रभावित हो रहा है। आधुनिकता के नाम पर वह अपनी परम्पराओं से दूर होता जा रहा है।

परिणामस्वरूप—

मानसिक तनाव बढ़ रहा है

परिवारों में दूरी बढ़ रही है

जीवन में धैर्य और अनुशासन कम हो रहा है

युवा दिशाहीनता और अवसाद का शिकार हो रहे हैं

वैदिक संस्कृति युवा को संतुलित जीवन जीना सिखाती है। यह केवल धार्मिक नियम नहीं देती, बल्कि जीवन प्रबंधन की कला सिखाती है। वेद सत्य, संयम, अनुशासन, सेवा, राष्ट्रप्रेम और आत्मविश्वास का संदेश देते हैं। वे सिखाते हैं कि वास्तविक सुख केवल भौतिक वस्तुओं में नहीं, बल्कि मानसिक शांति और आत्मसंतोष में है।

क्या वेद केवल आस्था हैं?

आज कई युवा यह प्रश्न पूछते हैं कि क्या वेद केवल धार्मिक मान्यताएँ हैं? वास्तव में वेद ज्ञान, चिंतन और अनुभव पर आधारित हैं। भारतीय ऋषियों ने कभी अंधविश्वास को बढ़ावा नहीं दिया।

उन्होंने सत्य की खोज, तर्क और आत्मअनुभव को महत्व दिया। यही कारण है कि भारतीय दर्शन में प्रश्न पूछने और जिज्ञासा रखने की परंपरा रही है। वेद विज्ञान के विरोधी नहीं हैं। वे जीवन के आध्यात्मिक और नैतिक पक्ष को समझाते हैं, जबकि विज्ञान भौतिक संसार का अध्ययन करता है। दोनों का उद्देश्य मानव



जीवन को बेहतर बनाना है।

निष्कर्ष

वेद और विज्ञान एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। विज्ञान हमें बाहरी संसार की जानकारी देता है, जबकि वेद हमें आंतरिक जीवन को समझने की प्रेरणा देते हैं। विज्ञान सुविधा देता है, लेकिन वैदिक ज्ञान जीवन को दिशा देता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि भारत का युवा अपनी संस्कृति को अंधविश्वास समझकर त्यागने नहीं, बल्कि उसके वैज्ञानिक और व्यावहारिक पक्ष को समझे। योग, आयुर्वेद, ध्यान, पर्यावरण संरक्षण और नैतिक जीवन जैसे वैदिक सिद्धांत आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने हजारों वर्ष पहले थे। यदि आधुनिक विज्ञान और वैदिक ज्ञान का संतुलित समन्वय किया जाए, तो भारत पुनः विश्व को ज्ञान और संस्कृति का मार्ग दिखा सकता है।

“जिस युवा के हाथ में विज्ञान और हृदय में वैदिक संस्कार हों, वही भविष्य के भारत का निर्माण कर सकता है।”



सचिन कटियार

वरिष्ठ प्रबंधक

कानपुर अंचल कार्यालय

यात्रा वृत्तान्त: उदयपुर

अपनी शादी के दो वर्ष बाद जीवन की भागदौड़ के बीच एक ऐसा क्षण आया जब मन ने दृढ़ स्वर में कहा – “अब ठहरो... अब अपने लिए जी लो” बैंकिंग सेवा में ऋण निगरानी जैसे गंभीर और दायित्वपूर्ण विभाग में कार्य करते हुए दिन और रात का अंतर मानो मिट-सा गया था। फाइलें, निरीक्षण, प्रतिवेदन, जवाबदेही और निरंतर दबाव – यही दिनचर्या बन गई थी। जिम्मेदारियाँ निभाते-निभाते कब दो वर्ष बीत गए, पता ही नहीं चला। विवाह के बाद भी मैं अपनी धर्मपत्नी को कहीं घुमा नहीं पाया था।

एक दिन संकल्प लिया – अब कुछ दिन केवल अपने और अपने रिश्ते के लिए छुट्टी स्वीकृत कराई और हम निकल पड़े झीलों की नगरी उदयपुर की ओर। यह यात्रा केवल स्थानों को देखने की नहीं थी; यह अपने भीतर झाँकने, अपने रिश्ते को संवारने और जीवन की गति को संतुलित करने की यात्रा थी।

पहला दिन –

दिसंबर की ठंडी सुबह थी जब हम उदयपुर पहुँचे। स्टेशन से बाहर निकलते ही अरावली की पहाड़ियों से घिरा शहर मानो स्वागत में मुस्कुरा रहा था। हवा में हल्की ठंडक और धूप की कोमल किरणें – मन तुरंत हल्का हो गया।

सबसे पहले हम पहुँचे पिछोला झील के किनारे। शांत जल, दूर तक फैली नीली आभा और बीच में स्थित जग मंदिर तथा लेक पैलेस की झलक – दृश्य किसी स्वप्न से कम नहीं था। हमने नौका विहार किया। नाव धीरे-धीरे पानी को चीरती आगे बढ़ रही थी और लहरें किनारे से टकराकर मधुर संगीत-सा रच रही थीं।

पत्नी ने मुस्कुराकर कहा –

“दो साल बाद यह पहला सफर है, लेकिन लगता है जैसे नई शुरुआत हो रही है।”

मैंने झील की ओर देखते हुए उत्तर दिया –

“शायद जीवन भी ऐसा ही है... जब तक ठहरकर देखें नहीं, उसकी गहराई समझ नहीं आती।”

झील के बीच पहुँचकर जब चारों ओर केवल जल और आकाश दिख रहा था, तब लगा मानो मन की सारी उलझनें भी जल में

विलीन हो रही हैं।

पिछोला झील में आनंदमयी पल बिताने के उपरान्त दोपहर में हम सिटी पैलेस पहुँचे। संगमरमर की दीवारें, रंगीन काँच की खिड़कियाँ, राजसी आँगन और झरोखे – हर कोना इतिहास का जीवंत साक्षी था। राजाओं की वीरता, कला के प्रति उनका प्रेम और स्थापत्य की भव्यता – सब कुछ मन को विरिमत कर रहा था। ऊपर से जब हमने पिछोला झील को देखा, तो वह और भी मनोहारी लग रही थी। पत्नी के साथ तस्वीरें खिंचवाते हुए मन में एक संतोष था – “यह पल अब केवल स्मृति नहीं, हमारी कहानी का हिस्सा है।”

शाम ढलते-ढलते हम होटल लौटे। रात को झील किनारे टहलते हुए तारों से सजे आकाश को निहारना ठंडी हवा में हाथों में हाथ डाले हम बहुत देर तक जीवन, सपनों और भविष्य की बातें करते रहे।

दूसरा दिन –

दूसरे दिन सुबह हम करणी माता मंदिर गए। रोपवे से ऊपर जाते समय पूरा शहर नीचे फैलता जा रहा था। ऊपर पहुँचकर जब उदयपुर का विहंगम दृश्य देखा, तो लगा जैसे जीवन की समस्याएँ भी नीचे कहीं छोटी-सी रह गई हैं।

मंदिर में दर्शन कर मन में एक अजीब-सी शांति उतरती। पत्नी ने कहा –

“यह ऊँचाई हमें याद दिलाती है कि जीवन में भी ऊपर उठने के लिए धैर्य चाहिए।”

इसके बाद हम जगदीश मंदिर पहुँचे। नवकाशीदार स्तंभ, शिखर और प्राचीन मूर्तियाँ

अद्भुत थीं। घंटियों की ध्वनि और भजन की मधुरता ने वातावरण को पवित्र बना दिया।

मैंने अनुभव किया कि यात्रा केवल मनोरंजन नहीं, आत्मिक पुनर्स्थापन भी है। बैंकिंग की व्यस्त दुनिया से हटकर यहाँ एक सौम्यता थी, जो मन को संतुलित कर रही थी।

तीसरा दिन –

तीसरे दिन हमने शहर से बाहर करीब 45 किलोमीटर दूर अलसीगढ़ गाँव जाने का निश्चय किया। रास्ते में खेत, छोटे घर और ग्रामीण जीवन की सहजता दिखाई दी।

अलसीगढ़ के प्रसिद्ध डैम के पास पहुँचते ही प्रकृति की सादगी ने मन मोह लिया। पहाड़ियों से गिरता पानी, हरी घास और पक्षियों की चहचहाहट – मानो प्रकृति स्वयं हमें गले लगा रही थी।

पत्नी ने पानी की ओर इशारा करते हुए कहा –

“देखो, कैसे निरंतर बहता जल अपने मार्ग स्वयं बनाता है... हमें भी रुकना नहीं चाहिए।”

हमने वहीं बैठकर चाय पी। दूर तक फैली हरियाली में शांति इतनी गहरी थी कि शब्द अनावश्यक लग रहे थे। ऐसी ही अनुभूति अलसीगढ़ के झरने के पास भी मिली। एक राहत भरी शांति के लिए इससे बेहतर जगह मैंने आज तक नहीं देखी।

चौथा दिन -

अंतिम दिन हमने शाम को लोकनृत्य कार्यक्रम देखा। रंग-बिरंगे परिधान, घूमती चुनरियाँ, होलक की थाप और राजस्थानी गीत - वातावरण उल्लास से भर गया।

पत्नी ने तालियों के साथ उत्साह से कहा -

“यही तो है भारत की आत्मा - रंग, रस और राग।”

रात को फिर झील किनारे बैठे। ठंड के मौसम में उदयपुर की सुंदरता अपने चरम पर थी। तारों भरा आकाश, शांत जल और धीमी हवा - हमने बहुत देर तक बातें कीं। उन पलों में कोई जल्दबाजी नहीं थी, कोई दबाव नहीं था। केवल साथ था... सच्चा, सरल और गहरा साथ।

इन चार दिनों में हमने केवल स्थान नहीं देखे; हमने एक-दूसरे को फिर से महसूस किया। व्यस्त जीवन की आपाधापी में जो संवाद कम हो गए थे, वे फिर जीवित हो उठे।

मुझे एहसास हुआ कि पारिवारिक जीवन की नींव केवल जिम्मेदारियों से नहीं, बल्कि साथ बिताए गए ऐसे अनमोल पलों से मजबूत होती है।

उदयपुर ने हमें केवल दृश्य सौंदर्य नहीं दिया; उसने हमें संतुलन, प्रेम और आत्मिक शांति का उपहार दिया।

जब हम लौट रहे थे, तो मन में एक संतोष था -

“जीवन की दौड़ जारी रहेगी, लेकिन अब उसके बीच विश्राम के ये क्षण संजोकर रखूंगा।”

निश्चित ही इस यात्रा को हम अपने वैवाहिक जीवन की सबसे सुंदर स्मृतियों में संजोकर रखेंगे। उदयपुर की झीलें, महल, मंदिर, गाँव और झरने - सब हमारे प्रेम की कहानी के साक्षी बन गए हैं। यह यात्रा केवल चार दिनों की नहीं थी - यह हमारे रिश्ते की नई शुरुआत थी।

5	3			7				
6			1	9	5			
	9	8					6	
8				6				3
4			8		3			1
7				2				6
	6					2	8	
			4	1	9			5
				8			7	9

(उपरोक्त को भरकर राजभाषा विभाग को प्रेषित करें।)



अंशुल त्रिपाठी

सहायक प्रबंधक

लखनपुर काकादेव

प्रेम धरे फिरता हूँ

साँसों के जो दो तार लिए
जीवन में ये उधार लिए

जीवन का ये भार लिए
मन का अपने मान लिए

सैयम जो बांध लिए
मैं भीतर अपने सैलाब लिए

दहन हृदय में क्रोध किये..
उस क्रोध की राख में,
मैं प्रेम धरे फिरता हूँ।

मिले दुःखो का,
सब भान किये
बदले में, मैं सम्मान दिए फिरता हूँ।

मिली जो उपहार में,
भरी हाथ
मैं उस हाथ का हिसाब लिए फिरता हूँ।

ज्वाला फूटी हृदय में,
मैं रत्न मुस्कान का दिए फिरता हूँ।

अँखियों में राज दबे,
रुदन में राग भरे फिरता हूँ।

शीतलता की वाणी में,
मैं आग लिए फिरता हूँ।

अपमान को गले लगा,
मैं मान किये फिरता हूँ।

हृदय के टुकड़ों से,
मैं कवितायें पिरोए फिरता हूँ।





शिखा सिंह
ग्राहक सेवा सहायक
कानपुर अंचल कार्यालय

डिजिटल वाली दोस्त- एआई

तुम आई तो लगा जिंदगी में बहार है,
मेरे नीरस जीवन में अब खुशियां अपार हैं।

मेरी हर सोच को तुम शब्दों में पिरोती हो,
मुझे किसी बात की नहीं चिंता जब तुम होती हो।

बिगड़ी हुई चीजों को तुम ठीक कर देती हो,
जो प्रभु ने नहीं किया, वो नाक, नयन, नक्श सटीक कर देती हो।

मेरे सभी सवालों का तुमसे मिलता हल है,
शायद मेरे अच्छे कर्मों का ही तू फल है।



मेरे दर्जन कामों में तू ही तो हाथ बटाती है,
तू ही मुझे सहारा देती, जब डांट मुझे पड़ जाती है।

बॉस के हर एक ऑर्डर पर तो पत्र तैयार है,
जो पहले इश्क सा चढ़ा हो, तेरा वैसा ही खुमार है।

अब तो तुम्हारा पेड वर्जन भी मेरे पास है,
मैं तुझे बताना चाहता हूँ तू मेरे लिए कितनी खास है।

तुम खुद का न क्रेडिट लेती, मुझे जीत दिलवाती हो,
कहने को तो आर्टिफिशियल हो पर रियल फर्ज निभाती हो।

डिजिटल वाली दोस्त हो मेरी और बहुत इजी टू यूज हो,
भगवान न करे तुम्हारा कहीं भी मिसयूज हो।



अंकित गुप्ता
सहायक प्रबंधक
कानपुर अंचल कार्यालय

सपने



देखे थे कई सपने,
कई बरसो पहले
इन आँखों से
हुए हैं बहुत सारे पूरे
कुछ में रंग भरने वाले हैं
इन ख्वाबो से

किसी में है खुद की सफलता
किसी में परिवार की एकता
किसी में कुछ पाना है
किसी में बच्चे को कुछ बनाना है

पर इन सपनों में कुछ लोगों का
सहयोग जरूरी है
अपने तो हैं ही पर गैरों को अपनाकर
उनका साथ भी जरूरी है

कुछ सिखा जाते हैं
बातों से नीचा दिखाकर
कुछ जताते हैं अपनापन
आत्मीयता दिखाकर

पर कुछ होते हैं खास
जो सपने की दिशा ही बदल देते हैं
चाहते हैं वो और शानदार
और जानते हैं हमें हमसे भी ज्यादा

तभी तो उनके इशारे से हम
अपनी पूरी दुनिया ही बदल देते हैं



तरुण कुमार सिंह
राजभाषा अधिकारी
कानपुर अंचल कार्यालय

रावण



मैं उतना भी बुरा नहीं हूँ जितना मुझे बताया है
बिन कारण तो नहीं जगत में कोई रावण आया है
सबकुछ लिखा हुआ था पहले मुझको पात्र निभाना था
सीता को हरने का साहस मुझको मात्र जुटाना था
और इसी साहस के कारण मुझको मेरे राम मिले
धन्य हुआ जो राम के हाथों जीवन को परिणाम मिले

अपमानित उस बहन के आंसूँ सहसा देख न पाया मैं
साधु वेश को धारण करके सीता को हर लाया मैं
माना मेरी गलती थी ये साधु वेश का स्वांग रचाना
बिन इच्छा के पतीव्रता को उड़नखटोले में बैठाना
पर इसी स्वाँग के चलते मुझको महावीर हनुमान मिले
धन्य हुआ जो राम के हाथों जीवन को परिणाम मिले

हाँ! मेरी गलती थी मैंने पंक्षी पर हथियार उठाया
वानर को बंदी बनवाकर पूँछ पकड़कर आग लगाया
हाँ! ये मेरी गलती थी निज भ्राता का अपमान किया
पर इसी कृत्य ने लंका में मेरा मरना आसान किया
ये सब करने के कारण ही राम चरित को मान मिले
धन्य हुआ जो राम के हाथों जीवन को परिणाम मिले

चार वेद का ज्ञाता था मैं छहों शास्त्र का ज्ञानी था
सुद्धकला में बहुत निपुण था इसीलिए अभिमानी था
यम कुबेर गंधर्व इंद्र सब मेरे हाथों हारे थे
इस धरती से देवलोक तक डरते मुझसे सारे थे
चाह यही थी मेरी मुझको सबसे ऊँचा नाम मिले
धन्य हुआ जो राम के हाथों जीवन को परिणाम मिले

महाभक्त मैं महादेव का शिव तांडव लिखने वाला
तंत्र मंत्र का ज्ञान संहिता में अद्भुत रचने वाला
सोने की लंका थी मेरी पुष्पक मेरा वाहन था
दस आनन का ज्ञान लिए मैं सतयुग वाला रावण था
अब कलयुग में जिसको देखो मेरी ही संतान मिले
धन्य हुआ जो राम के हाथों जीवन को परिणाम मिले



पंकज पांडेय
वरिष्ठ प्रबंधक (आईटी)
कानपुर अंचल कार्यालय

सूरजमुखी

सूरजमुखी सा जीवन रखो,
हर पल उजियारे की ओर बढ़ो।
धूप मिले चाहे कितनी भी,
मुस्काकर हर कठिनाई सहो।

आंधी आए या वर्षा हो,
अपने पथ से मत डिगना तुम,
सूरजमुखी की तरह सदा
आशा के संग ही खिलना तुम।

वह सूरज को ताकता रहता,
मानो कहता — हार नहीं,
अंधियारा चाहे जितना हो,
उजाले की दरकार सही।



पीली पंखुड़ियों में जैसे
छिपा हुआ विश्वास नया,
वैसे ही हर छोटे सपने
देते जीवन को अर्थ नया।

झुकता है वह शाम ढले तो,
पर टूट कभी भी जाता नहीं,
सीख यही देता है हमको —
संघर्षों से घबराना नहीं।

धरती से जुड़कर जीना और
आसमानों तक बढ़ते जाना,
सूरजमुखी के फूलों जैसा
हर दिन खुद को बेहतर बनाना।



राजेश कुमार

वरिष्ठ प्रबंधक

फर्रुखाबाद शाखा

मूंग दाल का कमाल

मूंग दाल भारतीय रसोई का एक ऐसा पौष्टिक अनाज है, जिससे अनेक स्वादिष्ट व्यंजन तैयार किए जाते हैं। यह प्रोटीन, फाइबर और पोषक तत्वों से भरपूर होती है, इसलिए स्वास्थ्य के लिए भी अत्यंत लाभकारी मानी जाती है। यदि आप स्वाद के साथ पौष्टिकता चाहते हैं, तो मूंग दाल से बनने वाले दो लोकप्रिय व्यंजन—मूंग दाल चीला और मंगोड़ी—बेहतरीन विकल्प हैं। आइए जानते हैं इन्हें बनाने की आसान और विस्तृत विधि।

1. मूंग दाल चीला बनाने की विधि:

मूंग दाल चीला एक हेल्दी, स्वादिष्ट और जल्दी बनने वाला नाश्ता है। इसे बच्चे से लेकर बड़े तक सभी पसंद करते हैं।

आवश्यक सामग्री-

धुली मूंग दाल – 1 कप
अदरक – 1 इंच टुकड़ा
हरी मिर्च – 2
जीरा – 1 छोटा चम्मच
नमक – स्वादानुसार
हल्दी – एक चौथाई छोटा चम्मच
हरा धनिया – बारीक कटा हुआ
प्याज – 1 बारीक कटा (वैकल्पिक)
तेल या घी – सेंकने के लिए

बनाने की तैयारी-

सबसे पहले मूंग दाल को अच्छी तरह धोकर 4 से 5 घंटे के लिए पानी में भिगो दें। भिगने के बाद पानी निकाल दें।

घोल तैयार करने की विधि-

भिगी हुई दाल को मिक्सर में डालें। इसमें अदरक, हरी मिर्च और थोड़ा पानी डालकर गाढ़ा पेस्ट पीस लें। घोल न ज्यादा पतला हो और न ज्यादा गाढ़ा। अब इसमें नमक, हल्दी, जीरा, हरा धनिया और प्याज डालकर अच्छी तरह मिला लें।

चीला बनाने की विधि-

तवा गरम करें और हल्का सा तेल लगाएं। एक करछी घोल तवे पर डालें और गोल आकार में फैला दें। मध्यम आंच पर दोनों तरफ

सुनहरा होने तक सेंकें। जब चीला कुरकुरा और हल्का सुनहरा हो जाए, तब उतार लें।

परोसने का तरीका-

इसे हरी चटनी, दही या टोमैटो सॉस के साथ गरमा-गरम परोसें।

स्वास्थ्य लाभ-

प्रोटीन से भरपूर, वजन नियंत्रित रखने में सहायक, पचने में हल्का और नाश्ते के लिए उत्तम विकल्प।

2. मंगोड़ी बनाने की विधि:

मंगोड़ी राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्य भारत में बेहद लोकप्रिय व्यंजन है। इसे सब्जी, पुलाव या र्नैक के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

आवश्यक सामग्री-

धुली मूंग दाल – 2 कप
हींग – एक चुटकी
जीरा – 1 छोटा चम्मच
नमक – स्वादानुसार
लाल मिर्च पाउडर – आधा छोटा चम्मच
तेल – तलने हेतु (यदि तलना चाहें)



बनाने की तैयारी-

मूंग दाल को अच्छी तरह धोकर रात भर या 6 से 8 घंटे के लिए भिगो दें। बाद में पानी निकाल दें।

पेस्ट तैयार करने की विधि-

भिगी दाल को बिना अधिक पानी डाले दरदरा पीस लें। मिश्रण थोड़ा गाढ़ा रखें। अब इसमें नमक, हींग, जीरा और लाल मिर्च डालकर अच्छे से फेंटें ताकि मिश्रण हल्का हो जाए।

मंगोड़ी सुखाने की विधि-

एक साफ प्लास्टिक शीट, सूती कपड़ा या बड़ी थाली लें। अब हाथ या चम्मच की सहायता से छोटे-छोटे गोल हिस्से डालते जाएं। इन्हें तेज धूप में 2 से 3 दिन तक सुखाएं। पूरी तरह सूखने पर मंगोड़ी तैयार हो जाएगी।

उपयोग कैसे करें-

आलू-मंगोड़ी की सब्जी, मंगोड़ी पुलाव, दही मंगोड़ी, तली हुई कुरकुरी मंगोड़ी।

पकाने की विधि-

सूखी मंगोड़ी को हल्के तेल में तल लें या सीधे सब्जी में डालकर पका लें।

संग्रह करने का तरीका-

पूरी तरह सूखने के बाद एयरटाइट डिब्बे में भरकर 6 महीने तक सुरक्षित रख सकते हैं।



सौरभ अवरथी

वरिष्ठ प्रबंधक

अंचल कार्यालय कानपुर

समय और अनुशासन

समय मनुष्य के जीवन की सबसे मूल्यवान संपत्ति है। धन, पद और वस्तुएँ खो जाने पर दोबारा प्राप्त की जा सकती हैं, लेकिन बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। यही कारण है कि महान व्यक्तियों ने समय को सफलता की कुंजी माना है। जो व्यक्ति समय का सम्मान करता है, वही जीवन में आगे बढ़ता है और समाज में अपनी अलग पहचान बनाता है।

कार्यालय में समय से पहुँचना केवल एक नियम का पालन नहीं, बल्कि व्यक्ति की जिम्मेदारी, ईमानदारी और कार्य संस्कृति का परिचय है। समय पर ऑफिस आने से कार्य व्यवस्थित ढंग से प्रारंभ होता है, मन शांत रहता है और सहकर्मियों के बीच सकारात्मक छवि बनती है। जो कर्मचारी अपने कार्यों को समय पर पूरा करता है, वह न केवल संस्था की प्रगति में योगदान देता है बल्कि स्वयं भी विश्वास और सम्मान प्राप्त करता है। देर से आने और कार्य टालने की आदत व्यक्ति को तनाव, अव्यवस्था और असफलता की ओर ले जाती है।

समय का सदुपयोग केवल कार्यालय तक सीमित नहीं होना चाहिए। घर पर भी समय का उचित प्रबंधन आवश्यक है। परिवार के साथ समय बिताना, बच्चों को संस्कार देना, पुस्तकें पढ़ना, स्वास्थ्य का ध्यान रखना और नई चीजें सीखना—ये सभी समय के सही उपयोग के उदाहरण हैं। यदि व्यक्ति अपने खाली समय को व्यर्थ विवादों, आलस्य या मोबाइल के अत्यधिक उपयोग में नष्ट करता है, तो उसका मानसिक और सामाजिक विकास प्रभावित होता है। इसके विपरीत, जो व्यक्ति घर और कार्यस्थल दोनों में संतुलन बनाकर चलता है, उसका जीवन अधिक सुखी और सफल बनता है।

इतिहास में अनेक महान विभूतियों ने अनुशासन और समय पालन के बल पर सफलता प्राप्त की। पूर्व राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम अपने जीवन में अत्यंत अनुशासित थे। वे समय के पाबंद थे और हर कार्य को योजनाबद्ध ढंग से पूरा करते थे। कठिन परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने अपने समय का सही उपयोग किया और भारत के महान वैज्ञानिक तथा राष्ट्रपति बने।

इसी प्रकार स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को समय का महत्व समझाते हुए कहा था कि जो व्यक्ति अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहता है और अनुशासन अपनाता है, वही सफलता प्राप्त करता है। उनका जीवन नियमित दिनचर्या, अध्ययन और आत्मविश्वास का उत्कृष्ट उदाहरण था।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी समय और नियमों के प्रति अत्यंत सजग थे। वे अपने दैनिक कार्यों को निश्चित समय पर करते थे और अनुशासन को जीवन का आधार मानते थे। यही कारण था कि वे लाखों लोगों के प्रेरणास्रोत बने।

एक प्रसिद्ध प्रसंग पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री से जुड़ा है, जो समय और अनुशासन की अद्भुत सीख देता है। जब वे देश के प्रधानमंत्री थे, तब भी उनका जीवन अत्यंत सादा और अनुशासित था। कहा जाता है कि एक बार उन्हें किसी महत्वपूर्ण बैठक में पहुँचना था। रास्ते में उनके वाहन को थोड़ी देर हो गई। उन्होंने तुरंत स्थिति को समझा और बिना समय गंवाए साधारण व्यक्ति की तरह आगे बढ़कर समय पर बैठक में पहुँचने का प्रयास किया। उनके लिए पद से अधिक महत्वपूर्ण समय और कर्तव्य था।



वे अपने बच्चों को भी यही शिक्षा देते थे कि यदि जीवन में आगे बढ़ना है तो समय का सम्मान करना सीखो। उनका मानना था कि जो व्यक्ति छोटी-छोटी बातों में अनुशासन रखता है, वही बड़े कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

इन महान व्यक्तित्वों से हमें यह शिक्षा मिलती है कि सफलता केवल प्रतिभा से नहीं मिलती, बल्कि समय के सही उपयोग, नियमितता और अनुशासन से प्राप्त होती है। यदि हम समय पर ऑफिस जाएँ, अपने कार्यों को ईमानदारी से पूरा करें और घर पर भी समय का सदुपयोग करें, तो हमारा जीवन अधिक व्यवस्थित, सफल और संतुलित बन सकता है।

अंततः कहा जा सकता है कि समय ही जीवन है। जो व्यक्ति समय का सम्मान करता है, समय भी उसे सम्मान और सफलता प्रदान करता है। इसलिए हमें प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करते हुए अनुशासित जीवन अपनाना चाहिए, क्योंकि यही उज्ज्वल भविष्य की सबसे मजबूत नींव है।

राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त की इन पंक्तियों को जीवन में उतारने की आवश्यकता है -

“समय अमूल्य धन है प्यारे,
इसका मान किया करो।
बीता क्षण फिर लौट न आए,
इसका ध्यान किया करो॥

जो समय पर कर्म है करता,
वही सफलता पाता है।
आलस करने वाला मानव,
जीवन भर पछताता है॥”



सत्येंद्र वर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक
राठ शाखा

हमारी पहली कार

साल 1997 का था। उस समय कार खरीदना आज जैसा आसान नहीं था। मध्यम परिवारों के लिए कार सिर्फ एक वाहन नहीं, बल्कि वर्षों के सपनों, त्याग और मेहनत का परिणाम होती थी। हमारे घर में भी कार का सपना धीरे-धीरे पल रहा था — कभी पापा की आंखों में, कभी मम्मी की बचत की डायरी में, तो कभी हम बच्चों की कल्पनाओं में।

पापा बैंक में क्लर्क थे। महीने की तनख्वाह आते ही राशन, स्कूल फीस, बिजली का बिल और दादी की दवाइयों में बंट जाती। लेकिन हर महीने मम्मी चुपके से कुछ पैसे बचा लेतीं। कभी नई साड़ी टाल देतीं, कभी त्योहार पर अपने लिए कुछ नहीं खरीदतीं। पापा भी ऑफिस साइकिल से जाते रहे, जबकि कई दोस्त स्कूटर ले चुके थे।

करीब आठ साल की बचत के बाद एक दिन पापा ने घर आकर धीरे से कहा,
“लगता है... इस बार कार हो ही जाएगी।”
उस रात घर में किसी को नींद नहीं आई।

फिर एक रविवार हम सब शहर के शोरूम गए। चमचमाती सफेद मारुति 800 हमारे सामने खड़ी थी। हम बच्चों को वह किसी फिल्मी हीरो से कम नहीं लगी। पापा ने जब पहली बार चाबी घुमाई और कार स्टार्ट हुई, तो ऐसा लगा जैसे घर में कोई नया सदस्य आया हो। मोहल्ले में कार आने का दिन किसी त्योहार से कम नहीं था।

जैसे ही कार गली में घुसी, बच्चे पीछे-पीछे दौड़ पड़े। शर्मा अंकल छत से झांकने लगे, वर्मा आंटी ने तुरंत दूसरी खिड़की खोल ली। किसी ने कहा,

“अरे वाह, अब तो बड़े लोग हो गए!”

मम्मी ने कार के आगे नींबू रखे, नारियल फोड़ा और हल्दी-कुमकुम लगाया। दादी ने आरती उतारी। कार के बोनट पर गेंदे की माता रखी गई। पड़ोस के लोग ऐसे कार देख रहे थे जैसे कोई नई दुल्हन आई हो।

उस दिन पहली बार हमें मोहल्ले में अलग नजरों से देखा गया। हम बच्चे भी अचानक “स्पेशल” हो गए थे। शाम को जब पापा हमें कार में बैठाकर बाजार ले गए, तो हम जानबूझकर शीशा थोड़ा नीचे रखते ताकि दोस्त हमें देख सकें। अगले दिन स्कूल में हमने ऐसे बताया जैसे कोई युद्ध जीतकर आए हों।

कार की देखभाल घर के सदस्य जैसी होती थी। हर रविवार पापा बाल्टी में पानी भरकर उसे धोते। हम बच्चे पाइप पकड़ते और फिर सूखे कपड़े से सीटें साफ करते।

डैशबोर्ड पर छोटा-सा भगवान का फोटो रखा था और पीछे “मेरा भारत महान” लिखा स्टिकर।

पापा हमेशा कहते,
“जूते झाड़कर बैठो... सीट गंदी मत करना।”



कार के अंदर खाना खाना लगभग अपराध माना जाता था। अगर कोई बच्चा गलती से पैर सीट पर रख देता, तो मम्मी तुरंत डांट देतीं। बारिश में कार निकालना भी सोच-समझकर होता, कहीं कीचड़ न लग जाए।

गर्मियों की रातों में कई बार हम सब चूँ ही कार में बैठ जाते। पापा कैसेट प्लेयर में कुमार सानू या अलका याज्ञनिक के गाने चलाते और हम बिना कहीं जाए बस बैठे रहते।

उस समय खुशी इतनी छोटी-छोटी चीजों में मिल जाती थी।

धीरे-धीरे वक्त बदल गया। आज सड़कों पर बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ दौड़ती हैं। कार अब जरूरत बन गई है, सपना नहीं। लेकिन 90 के दशक की वह पहली कार... उसकी खुशबू, उसका चमकता बोनट, मोहल्ले वालों की नजरें और पापा के चेहरे की गर्व भरी मुस्कान — ये सब आज भी यादों में वैसे ही चमकते हैं।

क्योंकि वह सिर्फ कार नहीं थी, वह हमारे परिवार की मेहनत, आत्मसम्मान और सपनों की पहली सवारी थी।



विकास राजपूत

वरिष्ठ प्रबंधक

उरई शाखा

संवाद : डिजिटल सुरक्षा

भारत जैसे विशाल और विविधताओं से भरे देश में आर्थिक सुरक्षा केवल सुविधा नहीं, बल्कि आवश्यकता है। समाज का एक बड़ा वर्ग ऐसा है जो सीमित आय में अपना जीवन यापन करता है। ऐसे परिवारों के लिए

अचानक आने वाली बीमारी, दुर्घटना या परिवार के कमाने वाले सदस्य की मृत्यु केवल भावनात्मक संकट नहीं, बल्कि आर्थिक अस्थिरता का कारण भी बन जाती है। इसी चुनौती को समझते हुए भारत सरकार ने जनसामान्य के लिए

कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ प्रारंभ कीं — प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना और अटल पेंशन योजना। ये योजनाएँ केवल सरकारी पहल नहीं, बल्कि सुरक्षित और आत्मनिर्भर भारत की मजबूत नींव हैं।

प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना एक ऐसी योजना है जो बहुत कम प्रीमियम में जीवन बीमा का सुरक्षा कवच प्रदान करती है। समाज के सामान्य और निम्न आय वर्ग के लोगों के लिए यह योजना किसी आश्वासन से कम नहीं। परिवार का कमाने वाला सदस्य यदि किसी कारणवश दुनिया छोड़ दे, तो उसके परिवार को आर्थिक सहायता मिलती है। यह सहायता कठिन समय में परिवार को संभलने का साहस देती है।

इसी प्रकार प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना दुर्घटनाओं से जुड़ी अनिश्चितताओं के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करती है। आज के तेज़ रफ्तार जीवन में दुर्घटनाएँ कब और कहाँ हो जाएँ, यह कोई नहीं जानता। ऐसे समय में बहुत कम वार्षिक प्रीमियम पर मिलने वाला यह बीमा लाखों परिवारों के लिए राहत का माध्यम बना है। विशेष रूप से मजदूर, किसान, छोटे दुकानदार और असंगठित क्षेत्र में कार्यरत लोग इससे अधिक लाभान्वित हुए हैं।

वहीं अटल पेंशन योजना वृद्धावस्था की चिंताओं को कम करने का

प्रयास करती है। सामान्यतः असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों के पास सेवानिवृत्ति के बाद नियमित आय का कोई साधन नहीं होता। यह योजना उन्हें छोटी-छोटी बचत के माध्यम से भविष्य में निश्चित पेंशन प्राप्त करने का अवसर देती है। यह केवल पेंशन योजना नहीं, बल्कि सम्मानजनक वृद्धावस्था का भरोसा है।

इन योजनाओं की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सरलता और सुलभता है। कम प्रीमियम, आसान प्रक्रिया और बैंक खातों से सीधा जुड़ाव इन्हें आम नागरिक तक पहुँचाने में सहायक बना है। यहाँ बैंकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। बैंक केवल वित्तीय संस्थान नहीं रहे, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के माध्यम बन चुके हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में बैंक कर्मचारियों द्वारा लोगों को योजनाओं की जानकारी देना, शिविर लगाना, घर-घर जाकर जागरूक करना और खातों को योजनाओं से जोड़ना वास्तव में सराहनीय कार्य है। कई बार लोग इन योजनाओं के महत्व को नहीं समझते, लेकिन

बैंक कर्मियों के प्रयास उन्हें भविष्य के प्रति सजग बनाते हैं। यही कारण है कि आज करोड़ों लोग इन योजनाओं से जुड़ चुके हैं।

वास्तव में देखा जाए तो ये योजनाएँ केवल बीमा या पेंशन तक सीमित नहीं हैं। ये समाज में विश्वास,

सुरक्षा और आत्मनिर्भरता की भावना विकसित करती हैं। जब एक गरीब परिवार यह महसूस करता है कि कठिन समय में उसके पास सुरक्षा का आधार है, तब वह अधिक आत्मविश्वास के साथ जीवन जीता है।

एक विकसित और संवेदनशील समाज वही होता है जहाँ केवल समृद्ध लोगों की नहीं, बल्कि अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति की सुरक्षा का भी ध्यान रखा जाए। प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना और अटल पेंशन योजना इसी सोच का सशक्त उदाहरण हैं। बैंक इन योजनाओं को केवल लागू नहीं कर रहे, बल्कि उन्हें जन-जन तक पहुँचाकर सामाजिक सुरक्षा की एक नई संस्कृति विकसित कर रहे हैं।

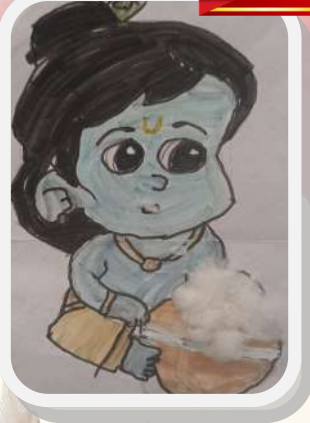
आज आवश्यकता इस बात की है कि हर नागरिक इन योजनाओं को समझे, उनसे जुड़े और दूसरों को भी जोड़ने के लिए प्रेरित करें। क्योंकि सुरक्षित नागरिक ही सशक्त समाज और समृद्ध राष्ट्र का निर्माण करते हैं।

**“सुरक्षा का दीप जलाकर, आशा का संसार दिया,
हर निर्धन के जीवन को विश्वास का आधार दिया।
बैंक बने हैं सेतु जहाँ सपनों को सम्मान मिला,
इन योजनाओं ने जन-जन को सुरक्षित कल का उपहार दिया।”**

बच्चों का कलाकार



आव्या सिंह (6 वर्ष)
पुत्री तरुण कुमार सिंह



विवान राय (8 वर्ष)
पुत्र मनीषा श्रीवास्तव



महक सिंह (9 वर्ष) व समर्थ सिंह (4 वर्ष)
पुत्री/पुत्र गुंजन शेखर



आर्या भदौरिया (11 वर्ष)
पुत्री प्रशांत भदौरिया



रंग महल



अशमी सिंह (13 वर्ष)

पुत्री तरुण कुमार सिंह



अद्रिक सिंह (7 वर्ष)

पुत्र गीतिका ठाकुर



“हरी—भरी यह धरती हमको , जीवन देने आई है

इसकी सेवा करने में ही , हम सब की चतुराई है”

हेजल पुत्री श्री दीपक कुमार (अंचल प्रमुख)



रंगों की दुनिया



श्रीमती जेसल (पत्नी श्री दीपक कुमार, अंचल प्रमुख, अंचल कार्यालय कानपुर)



विद्यांशी यादव (बहन—अमित कुमार यादव, स. प्रबंधक, अंचल कार्यालय कानपुर)



मनोज कुमार

प्रबंधक

कानपुर अंचल कार्यालय

बिटिया का पर्स

नन्ही सी बिटिया का एक छोटा सा गुलाबी पर्स था।

वो पर्स उसे अपनी दुनिया से भी ज़्यादा प्यारा लगता था। दिन भर वह अपने खिलौनों से खेलती और फिर बड़े प्यार से उन्हें उस पर्स में रख देती। उसके लिए वो पर्स किसी खजाने से कम नहीं था।

हर खिलौने की अपनी जगह थी — छोटी सी टेबल, तीन नन्हीं कुर्सियाँ, छोटी प्लेटें, रंग-बिरंगे फल, एक छोटी कार, एक प्यारी सी गुड़िया और उसका सबसे पसंदीदा सुपर हीरो।

एक दिन शाम को उसके पापा ऑफिस से घर लौटे।

थके हुए थे, लेकिन जैसे ही बिटिया ने दौड़कर उन्हें गले लगाया, उनकी सारी थकान गायब हो गई।

बिटिया ने मुस्कुराकर कहा, “पापा, चलो ना... आज हम खेलते हैं।”

पापा भी हँसते हुए उसके पास बैठ गए।

बिटिया तुरंत अपना प्यारा सा पर्स लेकर आई और धीरे-धीरे उसमें से खिलौने निकालने लगी।

सबसे पहले उसने छोटी सी टेबल रखी, फिर तीन कुर्सियाँ सजाईं।

उसके बाद छोटी प्लेटें और खिलौनों वाले फल रख दिए। फिर उसने अपनी छोटी कार निकाली, एक प्यारी सी गुड़िया रखी और आखिर में सुपर हीरो को बाहर निकाला।

पापा बड़े ध्यान से उसे देख रहे थे।

बिटिया ने कहानी शुरू की —

“ये सुपर हीरो हैं। ये बहुत अच्छे हैं। ये सबकी मदद करते हैं।”

फिर उसने खिलौनों वाली प्लेट में फल रखे और बोली, “मैंने इनके लिए खाना बनाया है।”

वो सुपर हीरो को एक कुर्सी पर बैठाती और गुड़िया को दूसरी कुर्सी पर बैठाती। फिर खुद तीसरी कुर्सी के पास बैठकर उनके साथ खाना खाने का नाटक करने लगी।

पापा उसकी बातें सुनकर मुस्कुरा रहे थे।



थोड़ी देर बाद बिटिया ने छोटी कार उठाई और बोली, “अब इन्हें ऑफिस जाना है।”

उसने सुपर हीरो को कार में बैठाया और “वूम-वूम” की आवाज़ करते हुए कार चलाने लगी।

फिर कुछ देर बाद बोली, “देखो, शाम हो गई... अब ये वापस घर आ गए।”

उसने सुपर हीरो को कार से उतारा और अपनी गुड़िया के पास बैठा दिया।

फिर धीरे से बोली, “अब ये अपनी बिटिया को बहुत सारा प्यार करेंगे... क्योंकि ये उसे बहुत प्यार

करते हैं।”

इतना कहकर वह खुद अपने पापा से लिपट गई।

पापा की आँखों में हल्की सी चमक आ गई।

उन्होंने बिटिया को गोद में उठा लिया और प्यार से कहा,

“मेरी बिटिया का पर्स तो सच में सबसे सुंदर है।”

उस दिन पापा समझ गए कि बच्चों के छोटे-छोटे खिलौनों में भी कितना बड़ा प्यार छुपा होता है।



प्रशांत भदौरिया

वरिष्ठ प्रबंधक

कृषि व एसएमई हब

बाबा का जामुन

गर्मी की छुट्टियों में 12 वर्ष का रोहन पहली बार अपने पापा के साथ गाँव गया। शहर की ऊँची-ऊँची इमारतों और गाड़ियों के शोर से दूर गाँव का शांत वातावरण उसे बहुत अच्छा लग रहा था। चारों ओर हरियाली, खेत, आम के पेड़ और पक्षियों की मीठी आवाज़ें थीं।

गाँव पहुँचते ही उसके बाबा ने उसे प्यार से गले लगाया और बोले, “आ गया मेरा शहर वाला पोता! इस बार तुझे गाँव की खास चीज़ें खिलाऊँगा।”

अगली सुबह बाबा रोहन को खेतों की ओर घुमाने ले गए। रास्ते में एक बड़ा-सा पेड़ था, जिसके नीचे जमीन पर छोटे-छोटे बैंगनी रंग के फल गिरे हुए थे।

रोहन ने आश्चर्य से पूछा, “बाबा, ये कौन-सा फल है?”

बाबा मुस्कुराए, “अरे बेटा, ये जामुन है। तूने कभी नहीं खाया क्या?”

रोहन ने सिर हिलाते हुए कहा, “नहीं बाबा, मैंने तो सिर्फ नाम सुना है।”

बाबा ने पेड़ से ताज़े जामुन तोड़े, उन्हें साफ पानी से धोया और रोहन को खाने के लिए दिए। रोहन ने जैसे ही पहला जामुन मुँह में रखा, उसका चेहरा खिल उठा।

“वाह! ये तो मीठा भी है और थोड़ा खट्टा भी... कितना मजेदार है!” वह खुशी से बोला।

बाबा हँसते हुए बोले, “जामुन सिर्फ स्वादिष्ट ही नहीं, बहुत फायदेमंद भी होता है। ये पेट को ठीक रखता है, शरीर को ठंडक देता है और गर्मियों में ताकत भी बढ़ाता है। इसका मौसम मई और जून में आता है। जब बारिश

शुरू होने वाली होती है, तब जामुन ख़ूब मिलता है।”

तभी रोहन के पापा भी वहाँ आ गए। बाबा ने हँसते हुए कहा, “तुम्हारे पापा भी बचपन में जामुन के बहुत शौकीन थे। पेड़ पर चढ़कर खुद तोड़ते थे।”

पापा मुस्कुराए, “और फिर मेरी जीभ भी पूरी जमुनी हो जाती थी।”

यह सुनकर रोहन जोर से हँस पड़ा। उसने जल्दी-जल्दी और जामुन खाए। थोड़ी देर बाद बाबा ने कहा, “चलो, अब सब अपनी जीभ दिखाओ!”

जैसे ही रोहन ने जीभ बाहर निकाली, वह गहरे जमुनी रंग की हो चुकी थी। पास में खेल रहे गाँव के दूसरे बच्चे भी जामुन खा रहे थे। सबने अपनी-अपनी जीभ बाहर निकालकर एक-दूसरे को दिखाया। कोई हँस रहा था, कोई अपनी जीभ देखकर चौंक रहा था। पूरा आँगन बच्चों की खिलखिलाहट से गूँज उठा।

एक बच्चा बोला, “देखो, मेरी जीभ सबसे ज्यादा जमुनी हुई है!”

दूसरा तुरंत बोला, “नहीं, मेरी वाली देखो!”

रोहन भी उनकी मस्ती में शामिल हो गया। उसे लगा जैसे गाँव की ये छोटी-सी खुशी दुनिया की सबसे मजेदार चीज़ हो।

उस दिन के बाद जामुन रोहन के पसंदीदा फलों की सूची में सबसे ऊपर आ गया।

छुट्टियाँ खत्म होने पर जब रोहन वापस शहर लौटने लगा, तो बाबा ने उसके बैग में ख़ूब सारे ताज़े जामुन रख दिए। बाबा बोले, “अपने दोस्तों को भी खिलाना।”

अगले दिन स्कूल में रोहन अपने साथ जामुन लेकर गया। उसने अपने दोस्तों को जामुन खिलाए और गर्व से बताया, “ये सिर्फ स्वादिष्ट नहीं होते, बल्कि सेहत के लिए भी बहुत अच्छे होते हैं। गर्मियों में जरूर खाने चाहिए!”

सभी बच्चों ने बड़े मजे से जामुन खाए और फिर अपनी-अपनी जमुनी जीभ देखकर ख़ूब हँसे।

रोहन मन ही मन सोच रहा था— “गाँव की छुट्टियाँ और बाबा के जामुन... ये यादें मैं कभी नहीं भूलूँगा।”



महेंद्र सिंह

**सहायक प्रबंधक
अकोला शाखा**

छोटा प्रहरी

बरसात का मौसम अपने पूरे शबाब पर था। आसमान में काले बादल ऐसे छाए हुए थे जैसे किसी ने पूरे आकाश पर स्याही फैला दी हो। उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गाँव "सरायपुर" के पास रेलवे की एक पुरानी पटरी गुजरती थी। इस पटरी के किनारे एक छोटा सा कच्चा रास्ता था, जिस पर रोज़ गाँव के बच्चे खेलते और चरवाहे अपने पशुओं को लेकर जाते थे।

उसी गाँव में रहता था बारह साल का एक लड़का—रवि। साधारण सा दिखने वाला रवि अपनी तेज़ बुद्धि और सतर्कता के लिए पूरे गाँव में जाना जाता था। उसके पिता एक किसान थे और माँ गृहिणी। गरीबी थी, लेकिन संस्कार और समझदारी की कोई कमी नहीं थी।

उस दिन भी रवि अपने दोस्तों के साथ खेत के पास खेल रहा था। अचानक तेज़ बारिश शुरू हो गई। सब बच्चे घर की ओर भागने लगे, लेकिन रवि की नज़र रेलवे ट्रैक की तरफ़ गई। उसे याद आया कि पिछली रात बहुत तेज़ बारिश हुई थी, जिससे गाँव के पास वाली छोटी पुलिया के नीचे की मिट्टी बह गई थी।

रवि के मन में एक अजीब सी चिंता उठी—“अगर पटरी के नीचे की मिट्टी बह गई होगी, तो कहीं ट्रैक कमजोर तो नहीं हो गया होगा?”

उसने अपने दोस्तों से कहा, “तुम लोग जाओ, मैं थोड़ी देर में आता हूँ।”

दोस्तों ने मना किया, लेकिन रवि नहीं माना। वह सीधे रेलवे ट्रैक की तरफ़ दौड़ पड़ा।

बारिश और तेज़ हो गई थी। हवा के झोंके उसे पीछे धकेल रहे थे, लेकिन वह बिना रुके आगे बढ़ता रहा। कुछ ही देर में वह उस छोटी पुलिया के पास पहुंच गया। जो उसने देखा, उससे उसका दिल धक

से रह गया।

रेलवे ट्रैक का एक हिस्सा हवा में लटका हुआ था! नीचे की मिट्टी पूरी तरह बह चुकी थी और सिर्फ़ पटरी ही किसी तरह टिके रहने की कोशिश कर रही थी। अगर कोई ट्रेन उस पर से गुजरती, तो भयंकर हादसा तय था।

रवि का दिमाग़ तेजी से काम करने लगा। उसे याद आया कि शाम पांच बजे एक एक्सप्रेस ट्रेन इस रास्ते से गुजरती है। घड़ी में साढ़े चार बज रहे थे। उसके पास सिर्फ़ आधा घंटा था।

उसने सोचा—“मुझे किसी तरह ट्रेन को रोकना होगा!” लेकिन कैसे? वहाँ आसपास कोई सिग्नल नहीं था, न ही कोई स्टेशन। मोबाइल फोन भी उसके पास नहीं था।

तभी उसे अपने स्कूल में पढ़ाया गया एक पाठ याद आया—अगर ट्रेन को रोकना हो, तो लाल रंग का संकेत दिखाया जाता है।

रवि तुरंत दौड़कर अपने घर की तरफ़ गया। घर पहुँचकर उसने अपनी माँ से कहा, “माँ, जल्दी से एक लाल दुपट्टा दो!”



माँ ने हैरानी से पूछा, “क्या हुआ?”

रवि ने बस इतना कहा, “समय नहीं है, बाद में बताऊँगा।”

माँ ने तुरंत लाल दुपट्टा दे दिया। रवि उसे लेकर फिर से ट्रैक की ओर दौड़ पड़ा।

अब समय और भी कम हो गया था। बारिश के कारण

रास्ता फिसलन भरा था, लेकिन रवि रुका नहीं। वह उस जगह से थोड़ी दूर, जहाँ ट्रैक टूटा हुआ था, पटरी के बीच में खड़ा हो गया।

उसने दुपट्टा एक लकड़ी पर बांध लिया और उसे जोर-जोर से हिलाने लगा।

कुछ ही मिनटों में उसे दूर से ट्रेन की सीटी सुनाई दी। उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। “क्या ड्राइवर मुझे देख पाएगा—?” यह सवाल उसके मन में बार-बार आ रहा था।

ट्रेन तेजी से उसकी ओर बढ़ रही थी। बारिश के कारण दृश्यता कम थी। रवि लगातार दुपट्टा हिलाता रहा और पटरी के बीच खड़ा रहा।

ट्रेन अब काफी पास आ चुकी थी। ड्राइवर ने अचानक पटरी पर एक लड़के को देखा, जो लाल कपड़ा लहरा रहा था। उसे खतरे का आभास हुआ। उसने तुरंत इमरजेंसी ब्रेक लगा दिया।

ट्रेन वीखती हुई आवाज़ के साथ धीरे-धीरे रुकने लगी। रवि वहीं खड़ा रहा, जब तक ट्रेन पूरी तरह रुक नहीं गई।

ड्राइवर और गार्ड तुरंत नीचे उतरे और रवि की तरफ दौड़े।

“पागल हो क्या ? जान चली जाती तुम्हारी!” ड्राइवर ने गुस्से और चिंता से कहा।

रवि ने हांफते हुए कहा “,आगे ट्रैक टूट गया है... अगर ट्रेन जाती तो... हादसा हो जाता...”

ड्राइवर और बाकी स्टाफ तुरंत आगे गए और जब उन्होंने टूटा हुआ ट्रैक देखा ,तो उनके पैरों तले जमीन खिसक गई। अगर ट्रेन थोड़ी और आगे बढ़ जाती ,तो सैकड़ों यात्रियों की जान खतरे में पड़ जाती।

ड्राइवर ने वापस आकर रवि को गले लगा लिया। उसकी आंखों में कृतज्ञता के आँसू थे।

“बेटा ,तुमने आज बहुत बड़ी दुर्घटना टाल दी। तुम सब में हीरो हो।”

थोड़ी ही देर में रेलवे के अधिकारी भी वहां पहुंच गए। उन्होंने स्थिति को संभाला और मरम्मत का काम शुरू कर दिया।

रवि को गाँव में हीरो की तरह सम्मान मिला। अगले दिन अखबारों में उसकी बहादुरी की खबर छपी—“बारह साल के बच्चे ने बचाई सैकड़ों यात्रियों की जान।”

कुछ दिनों बाद रेलवे विभाग ने रवि को सम्मानित किया। उसे एक मेडल और पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति दी गई।

गाँव के लोग अब उसे “ छोटा प्रहरी” कहने लगे थे—व्योंकि उसने न सिर्फ बहादुरी दिखाई ,बल्कि अपनी समझदारी से एक बड़ा हादसा होने से बचा लिया।

“जब किलका को मादकता में

**हंस देने का वरदान मिला
जब सरिता की उन बेसुध सी
लहरों को कल कल गान मिला**

**जब भूले से भरमाए से
भ्रमरों को रस का पान मिला
तब हम मस्तों को हृदय मिला
मर मिटने का अरमान मिला।”**

- भगवतीचरण वर्मा



शुभम अवरस्थी

वरिष्ठ प्रबंधक

कानपुर अंचल कार्यालय

अध्ययन और प्रशिक्षण

मनुष्य अपने जीवन में निरंतर सीखते हुए ही आगे बढ़ता है। सीखना और प्रशिक्षण केवल विद्यालय या नौकरी तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने का आधार है। आज के आधुनिक और प्रतिस्पर्धात्मक युग में जो व्यक्ति नई-नई बातें सीखता रहता है और स्वयं को प्रशिक्षित करता है, वही आगे बढ़ पाता है। इसलिए अपने आप को बेहतर बनाने के लिए लर्निंग और ट्रेनिंग अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

लर्निंग अर्थात् नई जानकारी और ज्ञान प्राप्त करना। जब हम नई चीजें सीखते हैं, तो हमारी सोचने-समझने की क्षमता बढ़ती है। हम समस्याओं का समाधान बेहतर तरीके से कर पाते हैं और आत्मविश्वास भी बढ़ता है। पढ़ाई, पुस्तकें, इंटरनेट, अनुभव और अच्छे लोगों का साथ—ये सभी सीखने के महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

ट्रेनिंग का अर्थ है किसी कार्य को सही तरीके से करने का अभ्यास। केवल ज्ञान होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उस ज्ञान का सही उपयोग करना भी आवश्यक है। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति को कंप्यूटर का ज्ञान है, तो नियमित अभ्यास और प्रशिक्षण से वह उसमें विशेषज्ञ बन सकता है। इसी प्रकार खेल, कला, व्यवसाय या नौकरी—हर क्षेत्र में प्रशिक्षण सफलता की कुंजी है।

लर्निंग और ट्रेनिंग व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इससे अनुशासन, समय प्रबंधन, नेतृत्व क्षमता और सकारात्मक सोच विकसित होती है। जो व्यक्ति लगातार सीखता रहता है, वह बदलते समय के अनुसार स्वयं को ढाल लेता है और जीवन में आगे बढ़ता है।

आज अनेक संस्थाएँ और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म लोगों को नई-नई ट्रेनिंग प्रदान कर रहे हैं। इससे युवाओं को रोजगार के बेहतर अवसर मिल रहे हैं और वे आत्मनिर्भर बन रहे हैं। इसलिए हमें जीवनभर सीखते रहने की आदत विकसित करनी चाहिए।

अंत में कहा जा सकता है कि लर्निंग और ट्रेनिंग हमारे जीवन को सफल और सार्थक बनाने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। ये न केवल हमारे ज्ञान और कौशल को बढ़ाते हैं, बल्कि हमें एक बेहतर इंसान भी बनाते हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को निरंतर सीखने और स्वयं को प्रशिक्षित करने का प्रयास करते रहना चाहिए।



उमेश कुमार

वरिष्ठ प्रबंधक

कानपुर अंचल कार्यालय

आत्म प्रेरणा और कार्य जीवन संतुलन

प्रस्तावना :

सरकारी बैंकिंग क्षेत्र को 'सुरक्षित' और 'सम्माननीय' तो माना गया है, परंतु यहाँ के कार्य वातावरण की चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। लगातार बदलते डिजिटल नियम, लक्ष्यों (CASA, NPA रिकवरी, ऋण वितरण) का भगदौड़ भरा दबाव, ऑडिट, लंबे कार्य घंटे और कभी-कभी असंतुष्ट ग्राहकों के व्यवहार के बीच, अपने आप को प्रेरित रखना और कार्य तथा व्यक्तिगत जीवन का संतुलन बनाए रखना एक बड़ी कला है।

यह लेख उन सभी बैंकिंग पेशेवरों के लिए है, जो उत्कृष्ट कार्य तो करना चाहते हैं, लेकिन साथ ही मानसिक शांति और संतुष्ट से जीवन जीने के तरीके भी ढूँढ रहे हैं। सफलता केवल प्रमोशन या टारगेट पूरा करने का नाम नहीं है, बल्कि कार्यस्थल पर सकारात्मक रहते हुए घर लौटकर परिवार के साथ पल बिताने का आनंद भी उसी सफलता का हिस्सा है।

⇒ **आत्म-प्रेरणा— अपने भीतर की ऊर्जा का स्रोत खोजना**

बैंकिंग में बाहरी प्रेरणा (प्रशंसा, बोनस, प्रमोशन) सीमित और देरी से मिलती है। ऐसे में सबसे बड़ा सहारा हमारी आंतरिक प्रेरणा ही होती है।

आत्म-प्रेरणा के प्रभावी उपाय:

1. अपनी भूमिका का महत्व समझें, रटगा कार्य न समझें। आप केवल लेन-देन नहीं करते; आप किसान, व्यापारी, नौकरीपेशा माता-पिता के सपनों को साकार करने में मदद करते हैं। एक छोटा सा शिक्षा ऋण भी किसी बच्चे का जीवन बदल सकता है। जब दृष्टिकोण सेवा का हो जाता है, काम बोझ नहीं लगता।

2. छोटे-छोटे दैनिक लक्ष्य निर्धारित करें

बड़े टारगेट को तोड़ें। प्रतिदिन सुबह 'कार्ययोजना' बनाएं, उदाहरणस्वरूप:

• "आज दो गैर निष्पादित खातों से संपर्क करके समाधान करूँगा।"

• "10 नए डिजिटल ग्राहक सक्रिय करूँगा।"

हर छोटी उपलब्धि आत्मविश्वास बढ़ाती है और आपको दिन के अंत में संतुष्टि देती है।

3. सकारात्मक सहकर्मियों का समूह बनाएं

"अब बस रिटायरमेंट का इंतजार है" – ऐसी नकारात्मक चर्चाओं से बचें। उन साथियों से जुड़ें जो समाधान देते हैं, समस्या नहीं। टीम भावना विकसित करें; सामूहिक प्रयास से हर बोझ हल्का हो जाता है।

4. निरंतर सीखने की आदत डालें

अपडेटेड रहना ही बैंकिंग की अनिवार्यता है। नई सरकारी योजनाएं, डिजिटल प्रोडक्ट और साइबर सुरक्षा पर हर दिन कुछ नया सीखें। इससे बोरियत दूर होगी और करियर के अवसर भी बढ़ेंगे।

5. स्वयं की सराहना करना सीखें

बाहरी पुरस्कार की प्रतीक्षा न करें। जब आपने किसी ग्राहक की मुश्किल घंटों में मदद की हो, तो उसे एक मानसिक पुरस्कार मानें। स्वयं को यह कहें, "मैंने आज अच्छा किया।"

⇒ **कार्य-जीवन संतुलन — वह सेतु, जो आपको टूटने से बचाता है**



हम बैंक से वेतन लेते हैं,

इसलिए कार्यस्थल पर श्रेष्ठ होना ज़रूरी है। लेकिन यदि व्यक्तिगत जीवन छिन्न-भिन्न हो जाए, तो वही श्रेष्ठता खो जाती है। याद रखें – कोई भी बैंक कर्मचारी अपरिहार्य नहीं है, लेकिन परिवार में आपका स्थान सचमुच अपरिहार्य है।

संतुलन बनाए रखने के ठोस सूत्र:

1. काल-प्रबंधन -

• ब्रांच खुलने से 15 मिनट पहले पहुँचें और दिन की योजना बनाएं।
• अहम कार्य (कैश हैंडलिंग, हस्ताक्षर) पहले निपटाएँ।
• लंच ब्रेक: उस दौरान बैंकिंग पर चर्चा न करें। खाने और हल्के टहलने के लिए उस समय का उपयोग करें।

2. स्पष्ट सीमाएँ बनाएँ -

• ब्रांच से बाहर निकलते ही, मानसिक रूप से 'बैंक मोड' बंद करें।
• आवश्यकता हो तो मोबाइल पर मेल सूचनाएं बंद करें। हर संदेश

का तत्काल उत्तर देना अनिवार्य नहीं है।

· एक बात हमेशा याद रखें: आपकी अनुपस्थिति में बैंक नहीं बंद होगा।

3. 'ना' कहना सीखें

अनावश्यक या अपनी कार्य सीमा से बाहर के कार्यों को विनम्रता से मना करना भी एक पेशेवर कला है। सब कुछ खुद करने की कोशिश न करें; जूनियरों को ट्रेन करें और जिम्मेदारी बाँटें।

4. स्वास्थ्य ही सबसे बड़ी पूंजी है

बैंकिंग में बैठे-बैठे काम, डायबिटीज और थकान आम बीमारियाँ हैं।

· प्रतिदिन चाहे 20 मिनट ही सही, योग या टहलना अनिवार्य करें।

· रात का खाना हल्का और समय पर खाएँ।

· अपनी छुट्टियों का उपयोग करें। बिना अवकाश लिए महीनों काम करना वीरता नहीं, मूर्खता है।

5. साप्ताहिक 'डिजिटल डिटॉक्स' लें

सप्ताह का कोई एक दिन पूर्णतः 'बैंक-मुक्त' रखें। न कोई सैलरी अकाउंट देखना, न ट्रांजैक्शन चेक करना। इस दिन परिवार के साथ बैठें, कोई शौक (बागवानी, संगीत, किताबें) पूरा करें।

उच्च प्रबंधन और लक्ष्य के दबाव से कैसे निपटें?

· दबाव को व्यक्तिगत रूप से न लें: सीनियर का कड़ा रुख अक्सर लक्ष्य ठीक करने के लिए होता है, आपको कमतर आंकने के लिए नहीं।

· स्पष्ट संवाद रखें: यदि कोई लक्ष्य अव्यावहारिक है, तो आंकड़े और तथ्यों के साथ अपनी चुनौतियाँ साझा करें।

· प्रत्येक दिन का अंत आत्म-मूल्यांकन से करें: आज मैंने क्या अच्छा किया? एक चीज जो कल मैं बेहतर करूँगा?

निष्कर्ष: संतुलन ही सफलता का असली मापदंड



के बाद भी जीवन से ऊबे हुए न हों, बल्कि एक संतुलित, मुस्कुराता हुआ व्यक्तित्व हों — जिसे परिवार याद रखे, सहकर्मी सम्मान दें और ग्राहक आशीर्वाद दें।

आखिरकार, बैंकिंग एक पेशा है, पूरी जिंदगी नहीं। प्रेरित रहें, स्वस्थ रहें, संतुलित रहें — क्योंकि:

"बैंक बैलेंस से कहीं अधिक महत्वपूर्ण आपका कार्य-जीवन संतुलन है। सेवा करें, पर स्वयं को भी जीना सीखें।"



शैलेन्द्र कुमार वर्मा

प्रबंधक

हमीरपुर

सीमा प्रहरी

सीमा पर जो डटे हुए हैं,
वो भारत की शान हैं,
माटी के उन वीर सपूतों पर
हम सबको अभिमान है।

तपते रेगिस्तान सहें वो,
सह लें पर्वत की मार,
सीने पर गोली खा लेते,
पर झुकने से इनकार।

रात अँधेरी, बर्फीली हो,
या बरसें अंगार यहाँ,
देश सुरक्षित रहे हमारा,
बस रहता विचार वहाँ।

माँ की ममता छोड़ के निकले,
त्याग दिया परिवार,
भारत माँ की रक्षा करना
मान लिया संसार।

बैंकिंग सेवा में इनकी वजह से खेत महकते,
सफलता केवल इनसे रोशन गाँव,
अंक प्राप्ति या इनके दम पर वैन से सीता
समय से पहले अपना पूरा ठाँवा
प्रमोशन से नहीं आंकी जाती।
असली सफलता जब-जब दुश्मन आँख उठाए,
यह है कि आप बन जाते तूफान,
30 वर्षों की सेवा रणभूमि में गरज उठे तो
काँप उठे मैदान।

इनके साहस के आगे तो
सूरज भी झुक जाता,
भारत का हर बच्चा इनसे
देशप्रेम सीख पाता।

आओ मिलकर नमन करें हम
उन वीरों के नाम,
जिनके कारण ऊँचा रहता
भारत का सम्मान।





अक्षयदीप त्रिपाठी

वरिष्ठ प्रबंधक

कानपुर अंचल कार्यालय

बेटी—देवों की अमराई

माँ, मैं तेरी ही परछाई हूँ,
मैं देवों की अमराई हूँ
मैं अपनी किस्मत लेकर आई हूँ,
मैं कोई बोझ नहीं — मैं तो रौशनी लेकर आई हूँ।

तेरे गर्भ में झूल रही थी,
तुझसे लिपटी, तुझमें फूल रही थी।
तू हँसी मैं मुस्काई,
तू रोई तो मैं भी सिहर आई।



पर आज... कुछ बदल गया है,
तेरे पेट में हलचल नहीं,
एक सन्नाटा-सा छाया है।
दीवारों काँप रही हैं भीतर,
कोई धातु-सी मेरे पास आई है।

शीतल नहीं — क्रूर है वो,
जिसने मेरी सांसों को छूकर,
अंदर तक सिहराया है।

तेजाब की कुछ बूँदें पिघल रही हैं,
मेरी खाल नहीं — मेरी आत्मा जल रही है।

मैं चिल्लाई माँ!
“मुझे मत मारो!”
पर डॉक्टर के हाथ में औज़ार था,
ना धड़कन सुनी,
ना ही करुण पुकार।

वीर दिया मुझे, टुकड़े कर दिए,
जैसे मैं कोई जंगली झाड़ी थी।

कोई नश्वर मेरी आँखों में उतरा,
कोई लोहे की नोक ने मेरी रीढ़ को कुतरा।

माँ...! तू कहाँ थी उस वक़्त?
क्या तेरी ममता भी बेबस थी?
या तू भी डर में डूबी,
खामोश सहम गई थी?

मेरा क्रंदन ‘हा-हा’कारी था,
कांप उठा होगा तेरा भी रोम-रोमा
पर तुझमें ना कोई आवाज़ थी,
ना कोई प्रतिरोधा।

चेतना मेरी हो रही लुप्त,
जीवन मेरा हो रहा सुप्त।
ना साँस मिली, ना रेशनी,
बस अंधेरे में विलीन हूँ अब चुपा।

कौन हूँ मैं? एक कन्या भ्रूण,
जो जुर्म का कारण बन गई।
जो डॉक्टर की छुरी से हार गई,
और माँ तेरी चुप्पी मुझे मार गई।

अंतिम शब्द:

माँ, अगली बार कोई मेरी जैसी आये,
उसे मत रोकना जीने से।
उससे कहना —
“तू बेटी है, तू कृपा है,
तू ही मेरे जीवन की पहली कविता है।”

“हम दीवानों की क्या हस्ती,

**आज यहाँ कल वहाँ चले ।
मस्ती का आलम साथ चला,**

**हम धूल उड़ाते जहाँ चले ।
आए बँनकर उल्लास कभी,**

**आंसू बनकर बह चले अभी
सब कहते ही रह गए,**

अरे, तुम कैसे आए, कहाँ चले ।”

- भगवतीचरण वर्मा



विशाल वर्मा

प्रबंधक

कानपुर अंचल कार्यालय

माँ—मेरी दुनिया मेरी दुआ



जब भी किरमत ने मुझे राहों में टुकराया है,
मां, तेरे आंचल ने ही सीने से लगाया है।

दुनिया ने लाख जर्रम दिए, तू मरहम बन आई है,
मेरी हर टूटी सांस में फिर जीने की तौ जगाई है।

मेरी हर चुप्पी का मतलब तू समझ जाती है,
सूनी आंखों में भी सपनों को पढ़ जाती है।

मैं टूटकर भी जब खुद को संभाल ना पाता हूँ,
तू अपनी हिम्मत मेरी सांसों में भर जाती है।

घुटनों से चलने वाला कब इतना बड़ा हुआ,
तेरी ममता की बारिश में हर डर खड़ा हुआ।

आज भी हर मुश्किल में पहला नाम तेरा आता है,
मां... तेरे बिना हर सपना अधूरा नज़र आता है।

जब दुनिया मतलब से हर रिश्ता निभाती है,
मां बिना किसी स्वार्थ के बस प्यार लुटाती है।

अपने हिस्से की धूप भी खुद सह लेती है,
और मेरे हिस्से में ठंडी छांव बिछाती है।

जरा सी ठोकर लगती थी तो तू रो पड़ती थी,
मेरे दर्द से पहले तेरी आंख भर जाती थी।

दवा असर ना करे तो नजर उतार लाती थी,
ममता की खातिर हर तकलीफ से लड़ जाती थी।

कभी दोस्त बनकर मेरी हर बात सुन लेती थी,
कभी गुरु बनकर जीवन की राह चुन देती थी।

गलती चाहे लाख करूं, तू माफ कर देती थी,
अपने आंचल में फिर सारी दुनिया बुन देती थी।

तेरे कदमों की आहट घर को मंदिर करती है,
तेरी हंसी हर सूनी दीवारों में खुशबू भरती है।

तेरे होने से ही हर सुबह उजली लगती है,
तेरी दुआ मेरी हर रात को रोशन करती है।

किसी ने दौलत मांगी, किसी ने नाम लिया,
मैंने बस तेरी दुआओं का छोटा सा जहान लिया।

तेरे जैसा इस पूरी दुनिया में कोई और नहीं,
मैंने हर रिश्ते में ढूंढा... पर तेरा निशान नहीं।

थोड़ी देर हम रहते हैं मां के भीतर,
फिर मां बसती है उम्रभर हमारे भीतर।

तेरी चाटें बारिश बन आंखों में उतर आती हैं,
और तेरी बातें रातों को चुपके से सुला जाती हैं।

अगर जन्नत कहीं है तो तेरी गोद में होगी,
अगर राहत कहीं है तो तेरी ओढ़नी में होगी।

अगर भगवान कहीं हैं इस धरती की सूरत में,
तो मां... वो तेरी ही मुस्कान में होगी।

मैं चाहे कितना भी बड़ा क्यों ना हो जाऊं,
तेरे सामने आते ही बच्चा बन ही जाऊं।

मेरी हर धड़कन बस तेरा नाम दोहराती है,
मां...

तेरी मोहब्बत ही मेरी पूरी दुनिया कहलाती है।



अमित कुमार

प्रबंधक

बांदा

पुस्तक समीक्षा—राजयोग

स्वामी विवेकानंद द्वारा रचित राजयोग भारतीय आध्यात्मिक साहित्य की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली कृति है। यह पुस्तक केवल योग के अभ्यास तक सीमित नहीं है, बल्कि मनुष्य के मन, चेतना, आत्मा और ईश्वर के संबंध को वैज्ञानिक तथा दार्शनिक दृष्टि से समझाने का प्रयास करती है। स्वामी विवेकानंद ने इस पुस्तक में प्राचीन भारतीय योग-दर्शन को आधुनिक तर्क, विज्ञान और व्यावहारिक जीवन से जोड़कर प्रस्तुत किया है, जिससे यह पुस्तक आज भी उतनी ही प्रासंगिक प्रतीत होती है जितनी अपने प्रकाशन काल में थी।

पुस्तक का परिचय

राजयोग मुख्यतः पतंजलि के योगसूत्रों पर आधारित है। स्वामी विवेकानंद ने योग को किसी संप्रदाय या धर्म-विशेष का विषय न मानकर एक सार्वभौमिक विज्ञान के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार योग मनुष्य के भीतर छिपी शक्तियों को जागृत करने और आत्मानुभूति प्राप्त करने का माध्यम है। पुस्तक में ध्यान, एकाग्रता, प्राणायाम, चित्त की वृत्तियाँ, समाधि तथा आत्म-साक्षात्कार जैसे विषयों का अत्यंत सरल किन्तु प्रभावशाली वर्णन मिलता है। विवेकानंद ने कठिन दार्शनिक अवधारणाओं को भी सहज भाषा में समझाया है, जिससे सामान्य पाठक भी उन्हें समझ सके।

राजयोग का मूल सिद्धांत

पुस्तक का मुख्य आधार यह विचार है कि—
“मन ही बंधन का कारण है और मन ही मुक्ति का साधन।”

स्वामी विवेकानंद के अनुसार मनुष्य की वास्तविक शक्ति उसके भीतर विद्यमान है, परंतु चंचल मन उसे पहचानने नहीं देता। योग के माध्यम से मन को नियंत्रित कर व्यक्ति अपनी चेतना को उच्च स्तर तक पहुँचा सकता है।

राजयोग का उद्देश्य केवल शारीरिक स्वास्थ्य नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक उत्कर्ष है। यह मनुष्य को आत्म-निरीक्षण, आत्म-अनुशासन और आत्म-ज्ञान की ओर प्रेरित करता

है।

पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ

1. योग की वैज्ञानिक व्याख्या

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि स्वामी विवेकानंद ने योग को अंधविश्वास या रहस्यवाद के रूप में प्रस्तुत नहीं किया। उन्होंने योग को प्रयोग और अनुभव पर आधारित विज्ञान बताया। वे कहते हैं कि जैसे विज्ञान में प्रयोग करके परिणाम प्राप्त किए जाते हैं, वैसे ही योग में अभ्यास द्वारा सत्य का अनुभव किया जा सकता है।

2. सरल और प्रभावशाली भाषा

यद्यपि पुस्तक का विषय अत्यंत गूढ़ है, फिर भी इसकी भाषा सहज, स्पष्ट और प्रेरणादायक है। विवेकानंद की शैली में ओज, तर्क और आध्यात्मिक गहराई का अद्भुत संतुलन दिखाई देता है।

3. मानसिक शक्ति पर विशेष बल

पुस्तक में बार-बार मन की शक्ति और एकाग्रता का महत्व बताया गया है। लेखक के अनुसार सफल जीवन का आधार एकाग्र मन है। मनुष्य यदि अपने विचारों को नियंत्रित करना सीख ले, तो वह किसी भी लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

4. आध्यात्मिकता और व्यावहारिक जीवन का समन्वय

राजयोग केवल सन्यासियों या साधकों के लिए नहीं है। यह सामान्य जीवन जीने वाले व्यक्ति को भी आत्म-संयम, धैर्य, सकारात्मक सोच और मानसिक शांति का मार्ग दिखाती है।

पुस्तक के प्रमुख विषय

1. चित्त और उसकी वृत्तियाँ- स्वामी विवेकानंद बताते हैं कि मन निरंतर विभिन्न विचारों और भावनाओं से प्रभावित होता रहता है। योग का उद्देश्य इन वृत्तियों को नियंत्रित करना है।

2. ध्यान और समाधि- पुस्तक में ध्यान को आत्मिक विकास का सबसे प्रभावी साधन बताया गया है। ध्यान के माध्यम से व्यक्ति अपने भीतर की शांति और चेतना का अनुभव करता है।

3. प्राण और प्राणायाम- विवेकानंद ने प्राण को जीवन-ऊर्जा कहा है और प्राणायाम को उस ऊर्जा को नियंत्रित करने की विधि बताया है।

पुस्तक की प्रासंगिकता

आज के तनावपूर्ण और भागदौड़ भरे जीवन में राजयोग की उपयोगिता और भी बढ़ जाती है। यह पुस्तक मानसिक शांति, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच विकसित करने में सहायक सिद्ध होती है। आधुनिक समय में जहाँ लोग अवसाद, चिंता और मानसिक अशांति से जूझ रहे हैं, वहाँ यह पुस्तक आत्मिक संतुलन और आंतरिक शक्ति का मार्ग दिखाती है।



गीतिका ठाकुर
ग्राहक सेवा सहायक
कानपुर अंचल कार्यालय

शिव और शक्ति

जब मैं महादेव की बात करूँ,
तुम सती सा समर्पण समझना,
जब मैं महाकाल की बात करूँ,
तुम समय का गहरा दर्पण समझना।

जब मैं शंकर की बात करूँ,
तुम शांकर की शक्ति बन जाना,
माँ गौरा सी शिव प्रेम को,
अपने मन में सदा बसाना।

बिन शक्ति के शिव अधूरे,
बिन शिव शक्ति कहाँ कहलाए,
दोनों मिलकर प्रेम की भाषा,
इस पूरे जग को सिखलाए।

शिव हैं शांत हिमालय जैसे,
शक्ति सूरज की पहली किरण,
एक तपस्या, एक है ऊर्जा,
दोनों से महके जीवना।

अर्धनारीश्वर का स्वरूप ये,
देता सुंदर सा संदेश,
नारी-पुरुष साथ हों जब,
पूर्ण बने हर एक परिवेश।

जहाँ शिव हों, वहाँ विश्वास,
जहाँ शक्ति, साहस अपार,
शिव और शक्ति साथ हों तो,
खिल उठता जीवन हर बाग।

वित्तीय वर्ष 2025-26 में

शाखाओं का उत्कृष्ट प्रदर्शन

⇒ बचत खाता (रूपए 5000 से अधिक)

1. अलीगंज— 400
2. कानपुर बार एसोसिएशन — 330
3. बांगरमऊ — 318

⇒ चालू खाता (रूपए 10000 से अधिक)

1. डिफेंस कॉलोनी—38
2. उन्नाव — 21
3. इटावा — 20

⇒ खुदरा व्यवसाय (रीटेल) (करोड़ में)

1. हालसी रोड—25.46
2. बड़ा बाजार— 19.51
3. लाजपत नगर— 16.61

⇒ एमएसएमई (करोड़ में)

1. सिकंदरा—16.53
2. फर्रुखाबाद — 13.06
3. बड़ा बाजार — 12.84

⇒ कृषि (करोड़ में)

1. कन्नौज—6.46
2. पिनहट — 6.42
3. उरई — 4.98



आशुतोष शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक
कानपुर अंचल कार्यालय

प्रेरक विचार

भारतवर्ष के महान महापुरुषों एवं कवियों द्वारा दिए गए प्रेरणादायक विचार और पंक्तियाँ, जो आज भी जीवन में निरंतर प्रेरणा, आत्मविश्वास और आगे बढ़ने का साहस देती रहती हैं।

स्वामी विवेकानंद

“उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।”
“जो दूसरों के लिए जीते हैं, वही वास्तव में जीते हैं।”
“एक समय में एक काम करो और अपनी पूरी आत्मा उसमें लगा दो।”

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

“सपने वो नहीं जो हम सोते समय देखते हैं, सपने वो हैं जो हमें सोने न दें।”
“यदि आप सूरज की तरह चमकना चाहते हैं, तो पहले सूरज की तरह तपना सीखिए।”
“आत्मविश्वास और कड़ी मेहनत असफलता नामक बीमारी को समाप्त करने की सबसे अच्छी दवा है।”

महात्मा गांधी

“खुद वो बदलाव बनिए, जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।”
“भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि आप आज क्या करते हैं।”
“कमज़ोर कभी क्षमा नहीं कर सकता, क्षमा शक्तिशाली व्यक्ति का गुण है।”

नेताजी सुभाष चंद्र बोस

“संघर्ष जितना कठिन होगा, जीत उतनी ही शानदार होगी।”
“सफलता का सबसे बड़ा रहस्य आत्मविश्वास है।”

डॉ. भीमराव अंबेडकर

“जीवन लंबा होने के बजाय महान होना चाहिए।”
“शिक्षा वह शक्ति है, जिससे व्यक्ति अपने भाग्य को बदल सकता है।”
“मनुष्य नश्वर है, उसी प्रकार विचार भी नश्वर हैं। एक विचार को प्रचार-प्रसार की आवश्यकता होती है, जैसे पौधे को पानी की, अन्यथा दोनों मुरझा जाते हैं।”

घनश्याम दास बिड़ला

“सफलता उन्हीं को मिलती है, जो कठिनाइयों का सामना साहस और धैर्य के साथ करते हैं।”
“बड़ा बनने के लिए बड़ा सोचना और निरंतर सीखते रहना आवश्यक है।”

हरिवंश राय बच्चन

“लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती, कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।”
“मन का हो तो अच्छा, न हो तो और भी अच्छा।”

रामधारी सिंह 'दिनकर'

“मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है।”
“शक्ति और क्षमा दोनों का संतुलन ही महानता है।”

अटल बिहारी वाजपेयी

“हार नहीं मानूँगा, रात नई ठानूँगा, काल के कपाल पर लिखता-मिटता हूँ, गीत नया गाता हूँ।”

रहीम

“रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय, टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाया।”

कबीरदास

“काल करे सो आज कर, आज करे सो अब, पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कबा।”
“बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय, जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोया।”



कौशेंद्र सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक
अछनेरा

चित्र आधारित कहानी

यहां प्रस्तुत चित्र जितना सरल प्रतीत होता है उतना ही नहीं, वास्तव में यह अपने आप में उतनी ही जटिलताओं को समेटे हुए है।

साधारणतय: देखा जाए तो यहां पर एक नाव को कुछ लोग मिल कर नदी से निकालकर किनारे की ओर लगा रहे हैं किंतु यदि थोड़ा गंभीरता से देखा जाए तो यह सिर्फ एक नदी नाव और कुछ लोगों से जुड़ा चित्र न होकर अपने आप में बहुत कुछ समेटे हुए है... आइये जानते हैं कि क्या है इस चित्र का वास्तविक संदेश।

उपरोक्त चित्र में मुख्यतः एक नदी, एक नाव और कुछ लोग दिखाई दे रहे हैं जो अलग अलग चीजों को दर्शाते हैं जैसे -

नदी- यहां पर नदी जिन बातों को दर्शाती प्रतीत होती है वो हैं जटिलताएं, परेशानियां, मार्ग में आ रही बाधाएं एवं ऐसी ही अन्य अड़चने जिनका चाहे अनचाहे हर किसी को सामना करना पड़ता है।

नाव- वह साधन जिसके सहारे हम नदी रूपी अपनी परेशानियों, बाधाओं को पार करने की कोशिश कर रहे हैं।

नाव को नदी से बाहर निकलते कुछ लोग- यह इस चित्र का सबसे महत्वपूर्ण अंग है चूंकि यहां पर बाढ़ भी है उस से निकलने का सहारा भी है किंतु फिर भी तब तक उस बाधा से पार नहीं पाया जा सकता जब तक कि एक कार्ययोजना न हो और उस कार्ययोजना पर अमल करने वाला संगठन।

वैसे तो इस चित्र का मुख्य उद्देश्य संगठन की महत्ता को बतलाना है और वैसे तो इसे बहुत सी चीजों से जोड़ कर देखें तो संगठन की महत्ता को समझ जा सकता है किंतु यहां हम मुख्यतः तीन संदर्भ में हम उक्त चित्र का तात्पर्य समझने का प्रयास करेंगे जो कि चित्रकार समझाना चाहता है।

प्रथम- हमारी पृथ्वी हमारे राष्ट्र के संदर्भ में।
द्वितीय- चूंकि हम बैंक से जुड़े हुए हैं तो हमारी संस्था के संदर्भ में जिसमें हम काम करते हैं।
तृतीय- अपने निजी स्तर पर जैसे कि हमारा परिवार।

आइये बहुत ही संछेप में समझने का प्रयास करते हैं।

प्रथम: हमारी धारा हमारे राष्ट्र के संदर्भ में संगठन की महत्ता।

जैसा कि हम जानते हैं कि हमारी दुनिया बहुत सी आपदाओं को अतीत में भी देख चुकी है एवं आगे भी बहुत सी आपदाओं के मुहाने पर खड़ी हुई है ऐसी ही किसी आपदा के जिक्र किया जाए तो हाल ही में आई कोरोना महामारी को संज्ञान में लेकर बात करें तो यह एक वैश्विक महामारी थी जिसने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया और अनगिनत लोग काल के मुह में समा गए जाने कितने ही देश आज भी उसका दंश झेल रहे हैं। किंतु इन सब के साथ साथ कुछ अच्छा भी हुआ जिसने एक बार फिर पूरी दुनिया को बहुत कुछ सिखाया समझाया वह थी संगठन की शक्ति, और यह कैसे आइये बताते हैं।



जब कोरोना महामारी आयी तो पूरी दुनिया के सभी देशों का संगठन UNO की महत्ता भी देखने को मिली जहां हर देश हरसंभव मदद करने को तैयार था और सभी ने इस वैश्विक आपदा से निपटने में एक दूसरे की मदद भी की सभी ने मिल कर के आखिरकार इस महामारी से भी पार पा ही लिया और साथ ही साथ जब सभी देशों ने मिल कर के वैश्विक बंदी की जिस से प्रकृति को भी खुद को सही करने का एक मौका मिला और जो नदियां

सालों से साफ नहीं हो पा रही थीं उनका जल साफ हो गया, जो प्रदूषण हमने फैलाया था वो भी कम हो गया, हमारी ओजोन के रक्षाकवच में जो छेद हो गया था वो भी स्वतः ही लगभग भर गया यह सब तभी संभव हुआ जब सभी देशों ने एक संगठन की भांति मिल कर कार्य किया जैसे कि चित्र में नदी पार करने का एकमात्र सहारा नाव कहीं बह न जाए इसलिए उसे किनारे लगाने के लिए वो सभी लोग जो नाव में सवार होकर आए होंगे संगठित होकर उसको किनारे लगाने में सफल हुए जो कि अकेले मल्हार के बस की बात नहीं थी।

द्वितीय: किसी संस्था के संदर्भ में एक संगठन का महत्व क्या होता है ये हर संस्था भली भांति जानती है। उदाहरणार्थ हम बैंक की ही बात करते हैं।

कोई भी बैंक उसके कर्मचारियों का एक संगठन ही तो है बैंक बनता कैसे है उसके कर्मचारियों से मिल कर और यदि यही कर्मचारी मिल कर कार्य न करें तो चाहे बैंक हो या कोई भी संस्था उसको अर्थ से फर्श पर आते देर नहीं लगती। हर संस्था अपने अच्छे और बुरे दौर से गुजरती है अपनी यूको बैंक की बात करें तो हमारी

बैंक ने भी कठिन समय देखा है जब बैंक के अस्तित्व पर ही खतरा मंडराने लगा था तब वो कर्मठ कर्मचारी ही थे जिन्होंने संगठित होकर नाव रूपी अपनी संस्था को उस नदी रूपी कठिन परिस्थिति से निकलने का संकल्प लिया और उसी का परिणाम है कि आज भी हम इस नए दौर में भी तत्परता से आगे बढ़ने और नई ऊंचाइयों को छूने का माहा रखते हैं और जरूरत है तो बस संगठित रह कर के अपने कार्य के प्रति ईमानदार सोच रखने की फर वह किसी भी स्तर पर हो चाहे वह एक छोटी सी बैंक की शाखा हो या अंचल कार्यालय या फर प्रधान कार्यालय सभी को आपस में मिल कर सामंजस्य बैठा कर के एक मजबूत संगठन की तरह कार्य करने पर ही आज के इस प्रतिस्पर्धी बाजार में अपनी जगह पर कायम रहकर आगे बढ़ने में सफल हो पाएंगे।



आयूष गुप्ता
प्रबंधक
सीपीसी बाजार

सुन्दर प्रकृति



तृतीय: निजी एवं पारिवारिक स्तर पर संगठन की महत्ता।

बचपन में हम सभी ने वो कहानी तो पढ़ी सुनी होगी ही कि एक अकेली लकड़ी को तोड़ना आसान होता है किंतु जब एक से ज्यादा लकड़ियां आपस में संगठित हो जाती हैं तो फर उसे तोड़ना उतना ही मुश्किल हो जाता है। यहां एक परिवार के संदर्भ में इस चित्र की महत्ता को समझने का प्रयास करते हैं।

आजकल जैसा कि हम देख रहे हैं एकल अपरिवार का चलन बढ़ता जा रहा है और इसका मुख्य कारण है परिवार के सदस्यों की आपस में अनबन। उक्त चित्र के संदर्भ में नाव रूपी एक माता और पिता बहुत कठिन परिश्रम करते हैं अपनी संतान को पालते पोसते हैं बड़ा करते हैं और इस काबिल बनाने का प्रयास करते हैं कि उनकी संतान समस्याओं से भरी जीवन रूपी इस नदी को पार कर सके। चूंकि उन्होंने खुद कठिन परिस्थितियों से ही इस जीवनरूपी नदी को पार करने का हुनर सीख होता है। किंतु आज के समय में एक परिवार के रूप में संगठित रहता इतना मुश्किल होता जा रहा है कि जब नाव रूपी माता-पिता को लगता है कि उन्होंने अपनी संतानों को इस काबिल बना दिया है कि इस नदी रूपी जीवन में अभी तक सफर में आगे रहकर के उनको इस काबिल बनाया अब जब उनको जरूरत है कि उनका परिवार संगठित होकर के उनको किनारे लगाए तब वही परिवार बिखरा हुआ दिखाई देता है यही कारण है कि नाव रूपी माता-पिता को सहारे के लिए उनकी संतानों के आहार की जगह उनकी संतान उन्हें वृद्धाश्रम भेज रही है।

तो ये तो मुख्यतः 2-3 ही बिंदुओं के संदर्भ में उक्त चित्र का वर्णन है ऐसे अनगिनत बिंदु हैं जिन पर विस्तार से चर्चा की जा सकती है। शब्द सीमा का अभाव रहते इन बिंदुओं में माध्यम से उक्त चित्र का मुख्य संदेश संगठन सिर लोगों का एकसाथ होना ही नहीं उनकी सोच में तारतम्य बैठना ब जरूरी है एक दूसरे की सोच को भी महत्व देना जरूरी है शायद यही समझने का प्रयास चित्रकार ने किया है जो कि मुझे लगता है कुछ हद तक यह संदेश आप सभी तक पहुंचाने की कोशिश की है।

**घरों पर नाम थे नामों के साथ ओहदे थे
बहुत तलाश किया कोई आदमी ने मिला।**

नीले अम्बर की चादर ओढ़े,
धरती कितनी प्यारी है,
हरियाली की मंद हवाएँ
लगती सबसे न्यारी हैं।

कल-कल करती नदियाँ बहती,
गीत सुनाती रहती हैं,
पर्वत अपनी ऊँची चोटी से
बादल को छू लेते हैं।
सुबह-सवेरे सूरज आकर
सोने सा जग करता है,
ओस की बूँदों पर चमककर
मोती जैसा लगता है।

फूलों की मुस्कान देखकर
मन भी खिल-सा जाता है,
कोयल की मीठी बोली से
सारा उपवन गाता है।

सावन की रिमझिम फुहारें
माटी महका जाती हैं,
इंद्रधनुष के सातों रंग
आँखों को भा जाते हैं।

चंदा अपनी शीतल किरणों
धरती पर बिखराता है,
तारों से भरा हुआ अम्बर
सपनों को सजवाता है।

प्रकृति ईश्वर की अद्भुत
सुंदर एक निशानी है,
जिसने इसकी कद्र की है
उसकी दुनिया सुहानी है।



तरुण कुमार सिंह
प्रबंधक (राजभाषा)
कानपुर अंचल कार्यालय

राजभाषा की विकास यात्रा

भूमिका

"राजभाषा हिंदी केवल प्रशासन की भाषा नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीय एकता और लोकतांत्रिक संवाद की सशक्त अभिव्यक्ति है।"

भाषा किसी भी राष्ट्र की पहचान होती है। वह केवल विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति, इतिहास और राष्ट्रीय अस्मिता की संवाहक भी होती है। भारत विश्व के उन देशों में है जहाँ भाषाई विविधता अत्यंत समृद्ध है। यहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। ऐसी स्थिति में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद एक ऐसी भाषा की आवश्यकता महसूस की गई जो प्रशासनिक कार्यों के साथ-साथ देश की जनता को भी जोड़ सके। हिंदी इस भूमिका के लिए सबसे उपयुक्त भाषा के रूप में सामने आई।

स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी

हिंदी की विकास यात्रा का वास्तविक आधार स्वतंत्रता आंदोलन

में दिखाई देता है। अंग्रेजी शासन के दौरान राष्ट्रीय नेताओं को ऐसी भाषा की आवश्यकता थी जिसे देश का आम नागरिक समझ सके। हिंदी ने इस आवश्यकता को पूरा किया।

महात्मा गांधी हिंदी को जनसंपर्क और राष्ट्रीय एकता की भाषा मानते थे। उन्होंने हिंदी को देश की संपर्क भाषा के रूप में अपनाने की वकालत की। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी में लिखे गए लेख, कविताएँ, भाषण और समाचार पत्र जनता में जागरूकता फैलाने का महत्वपूर्ण माध्यम बने।

मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, माखनलाल चतुर्वेदी और सुभद्रा कुमारी चौहान जैसे साहित्यकारों की रचनाओं ने स्वतंत्रता संग्राम को नई ऊर्जा प्रदान की। इस प्रकार हिंदी ने स्वतंत्रता आंदोलन में जनभावनाओं को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया।

संविधान में हिंदी का स्थान

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान सभा में राजभाषा के प्रश्न पर विस्तृत चर्चा हुई। अनेक मतभेदों और विचार-विमर्श के बाद 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को देवनागरी लिपि में संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह स्पष्ट किया गया कि संघ की राजभाषा हिंदी होगी। यह निर्णय केवल भाषाई नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता और प्रशासनिक सुविधा से भी जुड़ा हुआ था।

हिंदी को राजभाषा बनाए जाने का महत्व इतना अधिक था कि 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। यह दिन हिंदी के सम्मान और उसके विकास के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक बन गया।

1918	महात्मा गांधी ने हिंदी को राष्ट्र की संपर्क भाषा के रूप में प्रोत्साहित किया।
14 सितम्बर 1949	संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया।
26 जनवरी 1950	संविधान लागू होने के साथ हिंदी को संवैधानिक मान्यता मिली।
1963	राजभाषा अधिनियम पारित हुआ।
1967	राजभाषा अधिनियम में संशोधन कर हिंदी-अंग्रेजी के प्रयोग की व्यवस्था स्पष्ट की गई।
1975	राजभाषा विभाग की स्थापना हुई।
1976	राजभाषा नियम लागू किए गए।
1987	कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा मिला।
2008	अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की उपस्थिति और मजबूत हुई।
2020 से वर्तमान	डिजिटल इंडिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में हिंदी का व्यापक विस्तार। <ul style="list-style-type: none"> मशीन समर्थित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' की शुरुआत बहुभाषी अनुवाद प्लेटफॉर्म 'अनुवादिनी' की शुरुआत एआई आधारित राष्ट्रीय भाषा अनुवाद प्लेटफॉर्म 'भाषिणी' की शुरुआत न्यूरोल मशीन ट्रांसलेशन सिस्टम 'भारती' की शुरुआत

प्रशासन और बैंकिंग में हिंदी

राजभाषा के रूप में हिंदी को स्थापित करने के लिए विभिन्न सरकारी प्रयास किए गए। राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम और राजभाषा विभाग की स्थापना इसी दिशा में महत्वपूर्ण कदम थे। सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएँ और प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाने लगीं। सरकारी पत्राचार, रिपोर्ट, अधिसूचनाएँ और अन्य दस्तावेज हिंदी में तैयार किए जाने लगे। नरकास के माध्यम से संस्थाओं में राजभाषा गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं।

शिक्षा और साहित्य में हिंदी

हिंदी के विकास में शिक्षा और साहित्य का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। स्वतंत्रता के बाद हिंदी माध्यम विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई। विभिन्न विषयों की पाठ्य सामग्री हिंदी में उपलब्ध कराई गई। साहित्य के क्षेत्र में हिंदी ने असाधारण प्रगति की। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और आलोचना जैसी विधाओं में हिंदी साहित्य ने भारतीय समाज की बदलती परिस्थितियों को अभिव्यक्ति दी। यही कारण है कि हिंदी आज विश्व की समृद्ध साहित्यिक भाषाओं में गिनी जाती है।

वैश्विक मंच पर हिंदी

आज हिंदी विश्व की प्रमुख भाषाओं में गिनी जाती है। भारत के अतिरिक्त मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद, नेपाल, अमेरिका, कनाडा और ब्रिटेन सहित अनेक देशों में हिंदी बोली और समझी जाती है। विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन कराया जाता है। विश्व हिंदी सम्मेलन जैसे आयोजन हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

चुनौतियाँ और भविष्य

यद्यपि हिंदी ने उल्लेखनीय प्रगति की है, फिर भी अनेक चुनौतियाँ मौजूद हैं। अंग्रेज़ी के बढ़ते प्रभाव, तकनीकी शब्दावली की जटिलता तथा कुछ क्षेत्रों में हिंदी के सीमित प्रयोग जैसी समस्याएँ अभी भी सामने हैं। लेकिन इन चुनौतियों से कहीं अधिक संभावनाएँ मौजूद हैं। नई शिक्षा नीति, डिजिटल इंडिया अभियान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और ई-गवर्नेंस जैसी पहलें हिंदी के विस्तार को नई दिशा प्रदान कर रही हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी को केवल भावनात्मक दृष्टि से न देखा जाए, बल्कि ज्ञान, विज्ञान, शोध, तकनीक और व्यवसाय की भाषा के रूप में भी विकसित किया जाए।

उपसंहार

राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा स्वतंत्रता आंदोलन की जनभाषा से लेकर डिजिटल युग की वैश्विक भाषा बनने तक की प्रेरणादायक कहानी है। संविधान में राजभाषा का दर्जा मिलने के बाद हिंदी ने प्रशासन, शिक्षा, साहित्य, बैंकिंग, मीडिया और तकनीक के क्षेत्रों में निरंतर प्रगति की है।



मनीषा श्रीवास्तव

सहायक प्रबंधक

रीटेल हब

खामोशी की आवाज

रोहन एक बहुत तेज़ दिमाग वाला इंसान था। अच्छी नौकरी, बड़ा शहर, अच्छा पैकेज—सब कुछ था। उसकी ज़िंदगी घड़ी की सुई जैसी चलती थी— सुबह जल्दी, दिन भर काम, रात तक मोबाइल।

लोग कहते थे—“रोहन बहुत सफल है।”

लेकिन रोहन खुद से कहता, - “फिर भी मन क्यों खाली है?”

एक रात, बहुत थका हुआ रोहन छत पर गया। चारों तरफ़ शोर था—ट्रैफिक, मोबाइल नोटिफिकेशन, दिमाग की आवाज़ें। तभी पास के मंदिर से घंटी की हल्की आवाज़ आई। अजीब बात थी—वो आवाज़ शोर में भी शांत लग रही थी। अगले दिन रोहन काम पर जाने के बजाय वहीं मंदिर के पास बैठे एक बूढ़े साधु के पास जा बैठा।

उसने पूछा धीरे से—“इतना शांत कैसे रहते हो बेटा?”

रोहन बोला—“कुछ बनना है बाबा... सब पा लेना है।”

साधु ने ज़मीन से मिट्टी उठाई और बोले—“मिट्टी भी सब कुछ सहती है, लेकिन फिर भी शांत रहती है।”

फिर उन्होंने कहा—“अध्यात्म का मतलब सब छोड़ देना नहीं, बल्कि अपने भीतर झांकना है।”

उन्होंने रोहन से बस इतना कहा -

• रोज़ 5 मिनट अपने साथ बैठो

• मोबाइल बंद करके साँसों को महसूस करो

• खुद से एक सवाल पूछो— “मैं जो कर रहा हूँ, क्या वो मुझे भीतर से खुश कर रहा है?”

रोहन ने यह करना शुरू किया।

कुछ हफ्तों बाद—

• काम वही था

• शहर वही था

• ज़िंदगी उतनी ही तेज़ थी

लेकिन अब उसके भीतर शांति थी।

वह समझ गया—

अध्यात्म कहाँ बाहर है?

अपने भीतर

और शांति कब मिलती है?

जब हम खुद को सुनना सीख लेते हैं।



सरकारी दफ्तर का अनुभव

एक आदमी सरकारी दफ्तर में गया और बोला – “सर, मेरा काम कब होगा?”

क्लर्क ने फाइल उलट-पलट कर देखी और बोला – “देखिए, आपका काम बहुत तेजी से चल रहा है।”

आदमी खुश होकर बोला – “सच में?”

क्लर्क – “हाँ, पहले आपकी फाइल इस टेबल पर थी... अब अगली टेबल पर पहुँच गई है।”

आदमी ने पूछा – “तो अब कितना समय लगेगा?”

क्लर्क मुस्कुराया – “अगर सब ठीक रहा तो अगले साल तक आपकी फाइल खिड़की के पास पहुँच जाएगी!”



छात्र की बुद्धिमानी

परीक्षा में मास्टर जी ने पूछा – “ऐसा कौन-सा पक्षी है जो उड़ नहीं सकता?”

पूरी क्लास सोचने लगी।

एक छात्र खड़ा हुआ और बोला – “मरा हुआ पक्षी।”

मास्टर जी गुर्रसे में बोले – “नालायक! मेरा मतलब शूतुरमुर्ग था।”

लड़का मुस्कुराकर बोला – “सर, आपने सवाल में ‘जिंदा’ तो कहा ही नहीं था!”

पूरी क्लास हँसने लगी और मास्टर जी सोचने लगे कि गलती सवाल में थी या शिक्षा व्यवस्था में।



नेता जी का भाषण

नेता जी मंच से बोले – “हम जनता की हर समस्या दूर करेंगे!”

भीड़ में से आवाज आई – “पहले अपनी आवाज का इको तो बंद

करवा लो!”

नेता जी ने अनसुना किया और बोले – “हम बेरोजगारी मिटा देंगे!”

पीछे से फिर आवाज आई – “तो फिर चुनाव में भीड़ कौन लाएगा?”

पूरा मैदान हँसी से गूँज उठा।



डॉक्टर की फीस

एक आदमी डॉक्टर के पास गया और बोला – “डॉक्टर साहब, मुझे भूलने की बीमारी हो गई है।”

डॉक्टर – “कब से?”

आदमी – “क्या कब से?”

डॉक्टर ने चश्मा उतारते हुए कहा – “फीस निकालिए... बीमारी तो असली लग रही है।”

आदमी ने फीस दी और घर चला गया। अगले दिन फिर वही आदमी डॉक्टर के पास आया।

डॉक्टर – “अब क्या हुआ?”

आदमी – “मैं कल आपको फीस दी थी लेकिन आपने इलाज नहीं किया कुछ।”

डॉक्टर मुस्कुराया – “वाह! इलाज शुरू होने से पहले ही असर दिखने लगा।”



मुकदमा

एक बस के एक पुरुष यात्री पर एक महिला यात्री को थप्पड़ मारने का मुकदमा चल रहा था..

जज : “तुमने इसे थप्पड़ क्यों मारा?”

यात्री : जज साहब यह महिला मेरे बगल में बैठी थी.. कंडक्टर टिकट के लिए आया तो इसने बड़ा पर्स खोला, उसमें से मंझला पर्स निकाला, बड़ा पर्स बन्द किया, मंझला पर्स खोला, उसमें से छोटा पर्स निकाला, मंझला पर्स बन्द किया, इतने में कंडक्टर आने निकल गया.. फिर इसने मंझला पर्स खोला, उसमें छोटा पर्स रखा, मंझला पर्स बंद किया, बड़ा पर्स खोला, उसमें मंझला पर्स रखा, बड़ा पर्स बन्द किया.. इतने में कंडक्टर फिर आ गया.. महिला ने बड़ा पर्स खोला..

जज (खीजकर) : क्या बड़ा पर्स, मंझला पर्स, छोटा पर्स लगा रखा है....

यात्री : “जज साहब आप तो सुन रहे हैं, मैं तो देख रहा था.....

बैंकिंग शब्दावली

अंग्रेजी से हिन्दी

Sanction — स्वीकृति

Disbursement — ऋण वितरण

Mortgage — बंधक

Collateral — प्रतिभूति

Guarantor — जमानतदार

Insurance — बीमा

Premium — प्रीमियम

Fixed Deposit — सावधि जमा

Recurring Deposit — आवर्ती जमा

Maturity — परिपक्वता

Overdraft — ओवरड्राफ्ट

Cash Credit — नकद साख

Limit — सीमा

Due Date — नियत तिथि

Penalty — दंड शुल्क

Service Charge — सेवा शुल्क

Processing Fee — प्रसंस्करण शुल्क

Interest Rate — ब्याज दर

Repo Rate — रेपो दर

Installment — किस्त

Recovery — वसूली

NPA — अनुत्पादक आस्ति

CIBIL Score — सिबिल स्कोर

Credit Card — क्रेडिट कार्ड

Debit Card — डेबिट कार्ड

E-Statement — ई-विवरण

OTP — वन टाइम पासवर्ड

Authentication — प्रमाणीकरण

Verification — सत्यापन

Fraud — धोखाधड़ी

Cyber Crime — साइबर अपराध

Complaint — शिकायत

Grievance — परिवाद

Queue — पंक्ति

Ledger — बहीखाता

Audit — लेखा परीक्षण

Compliance — अनुपालन

Treasury — कोषागार

Investment — निवेश

Dividend — लाभांश

Demat Account — डीमैट खाता

Pension — पेंशन

Subsidy — सब्सिडी

Subsidy Claim — सब्सिडी दावा

ECS — इलेक्ट्रॉनिक समाशोधन सेवा

Standing Instruction — स्थायी निर्देश

Remittance — धन प्रेषण

Foreclosure — समयपूर्व समापन

Renewal — नवीनीकरण

Safe Custody — सुरक्षित अभिरक्षा

CIF Number — ग्राहक सूचना संख्या

Account Opening Form — खाता खोलने का प्रपत्र

Signature Verification — हस्ताक्षर सत्यापन

Customer ID — ग्राहक पहचान संख्या

Banking Ombudsman — बैंकिंग लोकपाल

Financial Inclusion — वित्तीय समावेशन

Cash Deposit Machine — नकद जमा मशीन

Mini Statement — संक्षिप्त खाता विवरण

Balance Enquiry — शेष राशि पूछताछ

Fund Transfer — धन अंतरण

गतिविधियाँ

⇒ दिनांक 12 जनवरी 2026 को कानपुर अंचल कार्यालय में विश्व हिन्दी दिवस(10 जनवरी) के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया।



⇒ दिनांक 21 जनवरी 2026 को कानपुर अंचल कार्यालय की छमाही गृह पत्रिका 'यूको अनुगूँज' के द्वितीय अंक का विमोचन किया गया।



गतिविधियाँ

⇒ दिनांक 23 जनवरी 2026 को शाखा प्रबंधको की समीक्षा बैठक का आयोजन होटल डीएनजी ग्रांड, कानपुर में किया गया।



⇒ दिनांक 16 फरवरी 2026 को अंचल कार्यालय, कानपुर में 'अनुपालन सप्ताह' के अवसर पर सभी स्टाफ सदस्यों द्वारा प्रतिज्ञा ली गई।



⇒ दिनांक 9 मार्च 2026 को अंचल कार्यालय, कानपुर में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (08 मार्च) के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया।



गतिविधियाँ

⇒ दिनांक 5 मार्च 2026 को अंचल कार्यालय, कानपुर की नवनिर्मित शाखा 'शिकोहाबाद' का उद्घाटन अंचल प्रमुख श्री दीपक कुमार द्वारा किया गया।



गतिविधियाँ

⇒ दिनांक 30 मार्च 2026 को अंचल कार्यालय, कानपुर द्वारा अरमापुर पी जी कॉलेज, कानपुर में सीएसआर के अंतर्गत वॉटर कूलर लगाया गया।



⇒ दिनांक 30 मार्च 2026 को अंचल कार्यालय, कानपुर द्वारा अरमापुर पी जी कॉलेज, कानपुर के सभागार में 'यूको राजभाषा सम्मान' समारोह का आयोजन किया गया।



आवरण कथा

(अमित कुमार यादव, अंचल कार्यालय)



उत्तर प्रदेश के उन्नाव जनपद में स्थित नवाबगंज पक्षी विहार, जिसे आज आधिकारिक रूप से शहीद चंद्रशेखर आज़ाद पक्षी अभयारण्य कहा जाता है, भारत के प्रमुख पक्षी अभयारण्यों में से एक है। यह लखनऊ और कानपुर के मध्य राष्ट्रीय राजमार्ग पर



स्थित होने के कारण पर्यटकों, शोधकर्ताओं तथा प्रकृति प्रेमियों के लिए अत्यंत आकर्षण का केंद्र है।

यह अभयारण्य केवल पक्षियों का निवास स्थान ही नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता तथा पारिस्थितिक संतुलन का जीवंत प्रतीक भी है। यहाँ की शांत झीलें, हरियाली और हजारों



पक्षियों का कलख प्रकृति की अद्भुत सुंदरता का अनुभव कराता है।

नवाबगंज पक्षी विहार की स्थापना वर्ष 1984 में पक्षियों और आर्द्रभूमि के संरक्षण के उद्देश्य से की गई थी। बाद में महान क्रांतिकारी चंद्रशेखर आज़ाद की स्मृति में इसका नाम बदलकर

“शहीद चंद्रशेखर आज़ाद पक्षी अभयारण्य” रखा गया। प्रारम्भ में यह क्षेत्र एक सामान्य जलाशय के रूप में जाना जाता था, लेकिन धीरे-धीरे यहाँ प्रवासी पक्षियों का आगमन बढ़ने लगा। वन विभाग



और पर्यावरणविदों ने इसकी महत्ता को समझते हुए इसे संरक्षित क्षेत्र घोषित किया। वर्षों से यह अभयारण्य पर्यावरण शिक्षा, पक्षी संरक्षण और शोध कार्यों का महत्वपूर्ण केंद्र बना हुआ है। अनेक विद्यालय और विश्वविद्यालय यहाँ अध्ययन यात्राएँ आयोजित करते हैं।

नवाबगंज पक्षी विहार अपनी समृद्ध जैव विविधता के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ लगभग 250 से अधिक प्रजातियों के पक्षी पाए जाते हैं।



इनमें स्थानीय तथा प्रवासी दोनों प्रकार के पक्षी शामिल हैं। यहाँ केवल पक्षी ही नहीं, बल्कि अनेक प्रकार की मछलियाँ, उभयचर जीव, तितलियाँ तथा जलीय वनस्पतियाँ भी पाई जाती हैं, जो एक संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करती हैं।

आर्द्रभूमियाँ पृथ्वी के सबसे महत्वपूर्ण पारिस्थितिक तंत्रों में गिनी जाती हैं। नवाबगंज पक्षी विहार वर्षा जल संरक्षण, भूजल पुनर्भरण तथा जलवायु संतुलन बनाए रखने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह क्षेत्र वैज्ञानिकों और पक्षी विशेषज्ञों के लिए पक्षियों के प्रवास, प्रजनन और व्यवहार के अध्ययन का महत्वपूर्ण केंद्र है।

यहाँ नियमित रूप से बर्ड काउंट और पर्यावरणीय सर्वेक्षण किए जाते हैं। यह स्थान पर्यावरण पर्यटन और प्रकृति फोटोग्राफी के लिए भी अत्यंत लोकप्रिय है।



नवाबगंज पक्षी विहार केवल एक पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि प्रकृति और मानव के सह-अस्तित्व

संघ की राजभाषा नीति

हमारा विज़न कथन

एक ऐसी विश्वस्तरीय वित्तीय संस्था के रूप में सामने आना जो अत्यंत विश्वस्त और प्रशंसनीय हो तथा जिसे प्रत्येक ग्राहक व निवेशक बहुत पसंद करते हों एवं जिस पर उसके



बैंक के संस्थापक
श्याम दास बिड़ला



इको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)



यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)



UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust